मिट्टी की ख़ुशबू

उद्धव महाजन 'बिस्मिल'

मिट्टी की ख़ुशबू
काव्यसंग्रह

(नाअत, ग़ज़ल, गीत, कतआत, नज़्म, दोहे, माहिए, कहमुकरनियाँ, तिकड़ियाँ--- संग्रह)

उद्धव महाजन 'बिस्मिल'

(स्व. पिताजी निंबा जयराम महाजन)

इन्तेसाब

"हर मसर्रत को भूल जाता हूँ,
हौसला दिल का आजमाता हूँ,
जब मुझे वो दुवाएँ देते हैं,
एक नई ज़िंदगी सी पाता हूँ।"

"दिखाई मंज़िले मक़सूद, बन के रोशनी मुझको,
कलम चलता है अब मेरा, जो इक पैग़ाम होता है,
मुसलसल आशिशों से जब नवाज़ा मुझको वालिद ने,
मैं जब मशहूर होता हूँ, तो उनका नाम होता है।"

बाद 'बिस्मिल' कलम चलाना तू,
पहले कर ले गणेशजी की पूजा,
मंगल कर्मों के इष्टदेव है ये,
इनका सानी नहीं कोई दूजा |

...

कर के मुझपे इनायतें अपनी,
मेरी झोली को शब्द से भर दे,
तेज गति से चले कलम मेरा,
वर दे ए वीणावादिनी वर दे|

...

किए जा काम अपना, ऐबजोई की न कर परवाह,
ये दुनिया है, इसे तनक़ीद ही से काम रहता है |

...

जीवन की प्रतिध्वनियाँ

श्री उध्दव महाजन 'बिस्मिल' की रचना पढ़ना जीवन की संवेदनाओं से गुज़रना होता है | ग़ज़लों और नज्मों के रूप में महाजन की रचनांएँ मनुष्य के भीतर की आशा-आकांक्षाओं को शब्द देती हैं |बहुत कम शब्दों में जीवन के विस्तार, भावनाओं का आकाश और भीतरी तरंगों को इस संग्रह में बखूबी समेटा गया है | उनका जीवनदर्शन आशा और उत्साह से भरपूर है | हर चुनौती को स्वीकार कर मंज़िल की और बढ़ना उनकी रचनाओं की खूबी है | वे कहते हैं :

मुश्किलें लाख हो लेकिन नहीं डरना प्यारे,
हौसला बांध के हर रह से गुज़रना प्यारे |

छोटी-छोटी रचनाओं में अपनी बातें दृढ़ता से कहना और आशा से लबालब हर मोड़ पर सुरक्षित रहना, उनकी रचनाओं की विशेषताएँ हैं :

पल में बन जाता हूँ ,मैं पल में बिखर जाता हूँ,
इक फूसूँ की तरह मैं फिर से उभर जाता हूँ |श्री महाजन ने के जीवन की सच्चाई को अपनी रचनाओं में पिरोया है | कठिन और चुनौती भरे समय को उन्होंने जिया है | रचनाएँ उनकी जीवनयात्रा की गवाही देती हैं | वे चाहते हैं कि उनको ऐसा हौसला मिले जो आँधियों के पार ले जाए :

चाहे आँधी हो या तूफाँ आए,
सह सकूँ ऐसा जिगर दे मुझको |

उनकी तमाम रचनाओं में जीवन की बेहतरी की

तलाश है | इन रचनाओं में जहाँ संघर्ष है, वहीं उम्मीद और उपलब्धियाँ भी हैं | जहाँ चाहत है वहाँ निजी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति भी है | मुहब्बत से लबालब उनकी ग़ज़लें जवाँ दिल की प्रतिध्वनियाँ बन उभरती हैं | उन्होंने जीवन के उल्लासपूर्ण पलों को बहुत संवेदनशील शब्दों में पिरोया है | निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति सुखद बयानों की प्रतीक बन गई हैं:

तुम क्या मिले के मेरी तो दुनिया सँवर गई,
वरना जहाँ में कोई सहारा कभी न था |

श्री महाजन ने व्यक्ति, समाज और देश के भीतर घट रही तमाम घटनाओं को कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है | हमारे समाज में जहाँ सांप्रदायिक विसंगतियाँ है या उच्च नीच, अमीरी-ग़रीबी की दास्तान है, संघर्ष और उपलब्धियों की बात है, वे बिना किसी लाग-लपेट के शब्दों के माध्यम से सीधी-सादी भाषा मेंअपनी बात कह जाते हैं | जीवन में रिश्ते बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं | उन रिश्तों को संभालकर रखना होता है | रिश्तों से लगी चोट आदमी को नफरतों से भर देती हैं | समाज में रिश्ते आदमी और आदमी के बीच पुल का काम करते हैं | जब इन पुलों को आघात पहुँचता है, तब तिलमिलाहट रचना के रूप में इस तरह उभरती हैं :

रिश्तों की अहमियत को भुलाने लगे हैं लोग,
मौसम की तरह रंग दिखाने लगे हैं लोग |

सामाजिक विसंगतियों पर महाजन ने बहुत प्रहार किया है | आदमी जब अभावों और लाचारियों में धकेल दिया जाता है तब सारी दुनिया, रिश्ते, हमदर्दी मुँह मोड़ लेते है |

ऐसे में शायर बहुत संवेदनशील होकर अपनी अभिव्यक्ति देते हैं :

दुनिया में आज ये कैसा रिवाज है,
इन्सान के लहु से भी महँगा अनाज है|
शायद यही तरक्की पसंदों का है चलन,
घर से निकल के आ गई सड़कों पे लाज है|

ग़ज़लों के अलावा महाजन ने बहुत खुबसूरत दोहे लिखे हैं | इन दोहों में मानव जीवन की छोटी-बड़ी संवेदनाओं और विवंचनाओं को शब्दबद्ध किया गया है | इन दोहों की शब्दावली दोहों की परंपरागत लहज़े में हुबहू उतारकर प्रभावी बन उठी है:

कौन तुझे समझाएगा, अनुभव के ये बोल,
चिंता चिता सजाए है, मन की गठरी खोल|
राखिए इतना फासला, जिससे बाढ़े प्रीत,
इतना पास न आइए, छूट न जाए मीत|

महाजन ने माहिए भी लिखे हैं | छोटी-छोटी बहर में लिखी रचनाओं में उन्होंने जीवन की अनुभूतियों की कहानी कही है | साथ ही कत्आत के माध्यम से भी उन्होंने अपनी अनुभूति को प्रवाहित किया है :

दिल में मेरे उतर के देखो ज़रा,
ज़ख़्म ही ज़ख़्म तुम तो पाओगे,
तुम शरीके-सफर बनो तो सही,
सारे दुख-दर्द भूल जाओगे|

श्री महाजन ने ज़िंदगी को इतने आयमों में

परिभाषित किया है कि उनके शब्दों के आयामों में हर आदमी अपना प्रतिबिंब देख सकता है | ज़िंदगी की असंख्य छटाओं और अनुभवों को उन्होंने नज्मों में पिरोया है :

जो दिखाए अक्स अपना, आईना है ज़िंदगी,
खत्म जो कर दे जहाँ को, हादसा है ज़िंदगी |
हुस्न का जल्वा कभी तो मोजिज़ा है ज़िंदगी,
ख्वाब बन जाए कभी तो, है मुअम्मा जिंदगी |

आज की भौतिकवादी दुनिया में जीवन के केंद्र में कुंडली मारकर बैठ गया है | इन्सानियत, आदर्श, परोपकार और दूसरों के हितों की चिंता न करते हुए आदमी पैसे के पीछे बुरी तरह भाग रहा है | हमारे समय की इस सच्चाई को श्री महाजन ने अपनी नज्मों में बड़े खुबसूरती के साथ उभारा है :

पैसा ही यश दिलाता है, इंसा की बात को,
पैसा हो जेब में तभी शादी-बरात हो |
पैसे बगैर भाई भी पूछे न बात को,
पैसा अगर हो काम बने आधी रात को |

कुल मिलाकर श्री महाजन की रचनाएँ हमारे समयगत सच्चाई के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं | सामाजिक विसंगतियों और विरोधाभासों पर किया गया कठोर प्रहार है | जीवन की तरंगों को उन्होंने बहुत बारीकी से शब्दबद्ध किया है | इन रचनाओं में पाठक अपने मन की प्रतिध्वनि महसूस कर सकते हैं | कोई भी रचना तभी सफल कही जा सकती है जब पाठक रचनाओं में अपना प्रतिबिंब ढूँढ़ता है | श्री उद्धव

महाजन 'बिस्मिल' की रचनाओं में ऐसे प्रतिबिंबों की भरमार है | विश्वास है, पाठक इन रचनाओं में अपनी रचनाएँ पाएँगे |

डॉ. दामोदर खड़से
डी/डी -८ वृंदावन कॉम्प्लेक्स
शांतिवन के पास ,कोथरुड,
पुणे ४११०२९.

'मिट्टी की ख़ुशबू' की माया सोने की काया

महाजन 'बिस्मिल'जी की ग़ज़ल गीतिका के सागर की गहराइयों से जो महान कविता सर उभारती और उपरी सतह पर आकर मोतियों के वे थाल जो अपने दामन में लिए हुए आती है तट पर खड़े मनफहत तलब नज़्ज़ारा करने वालों के कदमों में उंडेल देती है|

ये खूबी पुणे में उन कवियों को नसीब रही है, जो 'नज़ीर फतेहपुरी' और 'दिलदार हाशमी' के कदम -से -कदम मिलाकर, गीत और संगीत, की सीधी डगर के राही रहे हैं| महाजन 'बिस्मिल' जी भी उन्हीं में से एक हैं, जिनकी पुस्तक 'मिट्टी की खुशबू' में शामिल नज़्म और ग़ज़ल कत्आत और दोहे की ललक और फबन अपनी धरती की माया को सोने की काया का रूप देकर शायरी की दिशाओं को कुछ इस तरह जगमगा रही है कि बर्रे सग़ीर के कहकशानी दायरों को आसमान चूम रहा है, इसलिए महाजन 'बिस्मिलजी' की कविता की रंग - बिरंग लड़ियों का हार गले में डाले हुए मैं भी क्यूँ न उनका स्वागत करूँ, इस उम्मीद पर के वे हिंदूस्तान की सेक्युलर रिवायात और हिंदुस्तान की गंगा-जमनी तहज़ीब की बक़ा के लिए दोहागोई को अपना मामूल बना लें तो अपना वतनी, क़ौमी और समाजी फर्ज़ भी बखूबी अदा कर सकेंगे|

११ मई २००७

अतीक़ अहमद "अतीक"४५४, नयापुरा
मालेगांव, जि. नासिक

'मिट्टी की ख़ुशबू'

अभिमत

कहते हैं कि जब शायरी की दुल्हन -

हौले-हौले कदम बढाती हुई शायर के दिलोदिमाग पर छाकर उसे धाराशाही कर देती है तब शायर के दिल से ग़ज़ल घुँघरुओं की तरह बजती हुई काग़ज़ पर थिरकने लगती है | फिर शायर और कवि की कलम की रफ्तार काबू में नहीं रहती| वह कल्पना में डूबता उतरता चला जाता है ओर क़सीदे, नज़्म ग़ज़ल, मक्ते अपने आप आते चले जाते हैं | रुमानियत, नज़ाक़त, हुस्न, मुहब्बत, इन्तज़ार, शिकवे शिकायत का दौर चल पड़ता है |

उद्धव महाजन जी ने अपनी पांडुलिपि मुझे दी | मुझे उर्दू नहीं आती | थोड़ी बहुत समझ लेती हूँ पूरी किताब पढ़ने में काफी समय लगा | ग़ज़ल व गीत में व मुक्त छंद में भी जो इनमें पूरी तरह मिलते हैं | रदीफ बहर, काफिए, मीटर का पूरा ध्यान रखना होता है, तभी वह गायकी के लिए सरस होती है | इस संकलन में ग़ज़लों का भंडार है | कुछ बहुत गहरी बात कह गईं हैं, कुछ तल्खी लिए हैं, तो कुछ रोज़मर्रा की बातें कहती है | उद्धव जी की उर्दू पर अच्छी पकड़ है | कठिन शब्दों के अर्थ भी दिए हैं जिससे मिसरे समझने में आसानी हो गई | जीवन के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है, ग़ज़लों के माध्यम से | "बिस्मिल" जी को कहीं कहीं बहुत तकलीफ महसूस

हुई है, शिकायत करने से भी नहीं चुके हैं | समझौते भी किए हैं|

"सितम दिल पर मेरे ढाया बहुत है,
मुझे अपनों ने तड़पाया बहुत है |"

समझौता ही तो है -

'दीप नज़र में उम्मीदों का जलते जलते जलता है,
नाऊम्मीदी का आंधियारा ढलते ढलते ढलता है |'

उन्हे दुनिया एक ख्वाब सी दिखाई देती है, और काँटो से घिरा गुलाब भी लगती है | कल्पना के साथ साथ कुछ संदेश भी दिए हैं | कहीं अर्जी भी दे दी है |

"सोने चाँदी की तमन्ना है किसे,
इक मुहब्बत का गुहर दे मुझको |"

'बिस्मिल' नाउम्मीद नहीं है | वे दुआ माँगते हैं, नफरत को प्यार में बदलने की | शायर के दिल की तड़प इन ग़ज़लों में साफ दिखाई देती है, ग़ज़ल चूंकि एक गंभीर विधा है इसलिए समाज के तौर तरीक़ों को भी काफिये से बाँधा गया है | पद्य और गद्य में यही अन्तर होता है | इन्सान के होंठों पर बनावटी हँसी बड़ी बेमानी दिखती है क्यों कि उसके दिल में कोई दर्द नहीं होता है | खुलकर रोने वाले या हँसनेवाले मीठे-मीठे दर्द का आनंद लेते रहते हैं | कुदरत के जल्वे बिखरे पड़े हैं | मौसम, समंदर, दरिया, पक्षी, फूल सब के रंगों में ग़ज़लें रंगी हुई हैं | रिश्ते बेमानी हो रहे हैं, बुजुर्गों के प्रति इनके मन में सहानुभूति है, आदर है |

ये आधुनिक दौर की ग़ज़लें हैं | अपने आसपास बुना हुआ ताना बाना पिरोया है | कविता और शायरी सामाजिक बदलाव व क्रांति का साधन भी है | कभी कभी यह अंधेरे के विरुद्ध एक संघर्ष भी है | यह एक दस्तावेज़ है | ये जब बोलती है, अपने तेवर दिखाती है, तो सीधा मस्तिष्क व हृदय को हिला देती है | 'बिस्मिल' जी की ग़ज़लें यही सब कुछ बोलती है, शिल्प की दृष्टि से भी परिपूर्ण है, परंतु कहीं - कहीं बन्दिश व विचारों में शिथिलता आ गई है | पाठक पन्ना पलट कर आगे बढ़ सकते हैं | उन्होंने काफी मेहनत की है, यथार्थ से टकराने की, परंतु उर्दू माहौल में अपना स्थान बनाने के प्रयत्न में कुछ तीव्रता जल्दबाजी दिखाई गई हैं | अच्छा होगा यदि धीरे-धीरे सीढ़ियाँ और गहराई में जाकर चढ़ने की कोशिश करें | अपने विचारों से श्रोताओं व पाठकों को अवगत कराने के लिए थोड़ा धैर्य व संयम से काम लें तो उचित होगा |

इन्होंने दोहे, माहिए, नज़्म, कतआत, गीत, कहमुकरनी भी संकलन में शामिल किए हैं | सभी ओर दृष्टि घुमाई है जो प्रशंसनीय है | प्रयत्न अवश्य ही सराहनीय है क्योंकि हिंदी और उर्दू भाषा की अच्छी पकड़ होना हर किसी के बस की बात नहीं है, काबिले तारीफ़ है | एक शायर व कवि की कल्पना की उड़ान ख़यालातों की रंगीन दुनिया की सैर कर रही है | 'बिस्मिल' जी बधाई के पात्र है| नज़्म व्यथा के रूप में अच्छी अभिव्यक्ति है | माहियों का प्रयास भी सफल रहा है| मँजते रहने की आवश्यकता है | समस्त राग-विराग चुनौतियों को पकड़कर सामाजिक सरोकारों से घुल मिल कर सृजन प्रक्रिया बढ़ाते चले |

'कतआत्' के द्वारा आवाहन दे रहे हैं | "ग़म में जीना सीख ले, दर्द पीना सीख ले"

दोहों में एक सीख है ---

"प्रेम की बानी बोलना, सब से अच्छा काम,

प्रेम ही से बन जाते हैं, सारे बिगड़े काम |"

इसी प्रकार से कई स्थानों पर, दोहों में अच्छी बात कही है | ग़ालिब, मीर, फिराक़

गोरखपुरी आदि की शायरी उनके जिगर का लहू है | शास्त्रीय पद्धति पर बहता दरिया है, डूब के मर जाना है | इसी को ध्यान में रखकर सृजन करें तो और निखार आएगा| ग़ज़ल का दायरा सीमित होता है, उसकी नज़ाकत को बरकरार रखकर कलम को और शायराना जाम में ढाल लें तो लुत्फ और आएगा |

अन्त में 'बिस्मिल' जी एक बहुत ही सहृदय, सीधे, सरल, प्रेम करनेवाले व्यक्तित्व के मालिक है | मदद के लिए तत्पर, बिना किसी स्वार्थ के सब के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित करते हैं | हँसमुख, आदरभाव से सब का मान रखते हैं | एक व्यक्ति के भीतर समुद्र की गहराई है जिसमें गोता लगाकर वे मोती चुनते हैं और दूसरों को कलम द्वारा बाँटते हैं | यह संकलन अनूठा प्रयास है | पाठकों को आनंद आएगा| शायर से मुलाक़ात होगी और आदान-प्रदान होगा| घर बैठे पहचान हो जाएगी | थोड़ी बहुत कमियाँ सब में होती है परंतु जब भंडार समक्ष हो तो

थोड़े बहुत कंकडों की कौन परवाह करता है !

अवश्य ही यह संकलन प्रशंसा पाएगा | भाई 'बिस्मिल' को 'मिट्टी की खुशबू' के लिए बहुत बधाई | यह खुशबू सब के मन को महकाती रहे | सौंधी-सौंधी मीठी -मीठी | इसकी जड़ें मिट्टी में धँसी हुई हैं | एक बार फिर इतने सुंदर संकलन के लिए हार्दिक बधाई !

प्रभा माथुर
१९/०४/२००७
अक्षय तृतिया के पावन अवसर पर
शुभेच्छा

सादगी भरा उनवान है - 'मिट्टी की ख़ुशबू'

"मुझे इंसान के हाथ बड़े खुबसूरत मालूम होते हैं, उनकी जुम्बिश में तरन्नुम है और खामोशी में शायरी | उनकी उँगलियों से सृजन की गंगा बहती है | ये वो फरिश्ते हैं जो दिलो दिमाग़ के सातवे आसमान से बही व इलहाम लेकर कागज़ की हक़ीर सतह पर नाज़िल होते हैं, और उसपर अपने अमिट निशान छोड़ जाते हैं| इन कागज़ों की दुनिया कविता - कहानी और किताब कहकर आँखों से लगाती है और इनसे रुहानी सुकून हासिल करती है|

अली सरदार जाफरी के ये अल्फाज़ मुझे उद्धव महाजन 'बिस्मिल' के मजमुए को पढ़ते वक्त लगातार याद आते रहे हैं |शायरी या कविता यक़ीनी तौर पर नाज़िल या अवतरित होती है जिनपर ये नाज़िल होती है उनके पास लफ़्ज़ ऐसी शक्ल इख्तियार करते चलते हैं, जो जानदारों से ज्यादा जानदार होते हैं | 'बिस्मिल' के पास शायरे फितरत भी है और शायरे कारीगरी भी | उनके कलाम में ज़िंदगी की हक़ीक़त भी है और जज़बात का समंदर भी | 'बिस्मिल' अपने इस सरमाए (पूंजी) के लिए शुरूआत में ही शुक्रिया अदा करना नहीं भूले | अपने मजमुए (ग़ज़ल संग्रह)में वे नबी हुजूर को अक़ीदत पेश करते हैं ....

अक़ीदत के हाथों से दामन पसारे,
तेरे दर पे आए हैं सब आने वाले|

वे मानते हैं, हम इन्सान गुनहगार है, खुदा मुक़द्दस है और हमारे और उसके बीच आक़ा हुज़ूर है | वे ही हमारी फिक्र करेंगे इसीलिए 'बिस्मिल' यक़ीनी तौर पर कहते हैं.......

हम गुनहगार हैं, आप ही के हुजूर,
आप ही अब करम कीजिए या नबी |

और उनके इस विश्वास को यक़ीन को बल मिला है , अपने इस मजमूए में वे ग़ज़ल तक सीमित नहीं रहे बल्कि उन्होने नज़्में, कत्आत, दोहे, माहिए और यहाँ तक की कहमुकरनियाँ और तिकड़ियाँ भी कहीं हैं |

आज ग़ज़ल सीमित दायरे में नहीं है |वो इतनी मथी जा चुकी है कि उसने दुनिया-ओ-जहान का अमृत भी देखा है और ज़हर के गहरे नश्तर भी फैले हैं और इन हक़ीक़तों का सामना करके ही "बिस्मिल" कह सके है ....

"जिंदगी को इक सुहानी दास्ताँ समझा था मैं,
फूल के संग ख़ार भी है, ये कहाँ समझा था मैं |"

आज के दौर में इसांनी ज़िन्दगी जितनी तंग और उलझी हुई है उतनी ही उसकी कीमत न के बराबर है, सियासत के बाज़ार में तो वो सिर्फ एक सस्ता सौदा है |

बहा देते हैं चन्द वोटों की खातिर,
ग़रीबों का लहू सस्ता बहुत है|
खुदा के वास्ते अब लौट आओ,
दिले 'बिस्मिल' यहाँ तनहा बहुत है |

चारों ओर भीड़ ही भीड़, यही है आज के महानगरों का मंज़र | ओर इस भीड़ में भी आदमी एकदम

अकेला है, 'बिस्मिल' की हस्सास तबीयत को ये माहौल रास नही आता उनके दिलमें एक तड़प पैदा होती है और वे कह उठते हैं ....

नफरत का एक काँटा लोगों, हो जाता है पल में जवाँ,
उल्फत का एक गुंचा लेकिन पलते पलते पलता है ,
कुछ वादों की गरमी से और कुछ दीद की ठंडक से,
प्यार का नन्हा पौधा दिल में फलते फलते फलता है |

सब्जेक्ट के लिहाज़ से ग़ज़ल के पटल में वुसअत हुई है वह ज्यादा फैला है लेकिन वावजूद इसके कहना होता है कि ग़ज़ल दिल की ज़मीन पर लगी वह खरौंच है जिसमें मुहब्बत का बीज पनपता है | ग़ज़ल हारील पक्षी की तरह अपने अजीज़ (इष्ट) को टहनी मानकर पकड़े रहती है | यानी इश्को-मुहब्बत खुशी और ग़म यास और अलम में ग़ज़ल अधिक रमती नज़र आती है, 'बिस्मिल' साहब को भी वही तलाश है,

मुहब्बत की निशानी ढूंढ़ता हूँ,
मैं बिती जिन्दगानी ढूँढ़ता हूँ,
बहा ले जाए जो एहसास दिल का,
ग़ज़ल में वो रवानी ढूँढ़ता हूँ|

'बिस्मिल 'की ग़ज़ल ने कुछ नया सोचने और नया कहने की कामयाब कोशिश की है वे खुबसूरत सोचते हैं और मानवीयत से भरपूर सादगी के साथ इस दुनिया पर भरोसा भी करते हैं....

मेरी चाहत का सिला देगी ये दुनिया एक दिन,
मुझको भी अपना बना लेगी ये दुनिया एक दिन,
बेअसर होंगी नहीं मेरी दुवाएँ दोस्तो ,
मुझको भी अपने दिल से लगा लेगी ये दुनिया एक दिन|

प्रोफेशन के हिसाब से उद्धव महाजन 'बिस्मिल' तालीम से जुड़े हैं | अहले ख़िरद (ज्ञानवान) अपनी तबीयत में लॉजिक (तर्क) पर ज्यादा भरोसा करते हैं | और ग़ालिब कहते हैं,

"दर्द को दिल में जगह दे ग़ालिब,
इल्म से शायरी नहीं होती"

लेकिन दोनों ही बातों यानी इल्म और जज़बात (ज्ञान और भावना) को 'बिस्मिल' पूरी शिद्दत से महसूस करते हैं दिल में दर्द को जगाना और इल्म का दीप जलाना दोंनो ही उन्हें पसंद है.....

हरफ से हरफ मिलाओ तो कोई बात बने,
इल्म का दीप जलाओ तो कोई बात बने |
यूँ तबस्सुम से काम नहीं चलेगा 'बिस्मिल,'
दिल में इक दर्द जगाओ तो कोई बात बने |

शायरी वही है जो दिलो -दिमाग़ को सेहतमंद तआस्सुर में इन्कसार (नम्रता) दे | और इस नम्रता में आदमीयत फले फूले | अपनी इस चिंता को वे बड़ी बारिकी से कह जाते हैं ......

नए मिजाज़ में ढलता हुआ नज़र आया,
तमाम शहर बदलता हुआ नज़र आया,
खराब वक्त पड़ा हम पे जिस घड़ी यारो
हर एक शख़्स बदलता हुआ नज़र आया |

लेकिन उन्हें भरोसा है हालात पर ,और अपने आपपर वे बदलते मंजर को वक्त की निगाह से देखते हैं, और कहते हैं .....

एक दिन ये ज़रूर सुलझेगी,
उलझनों की उठान है यारो |

शायर का न केवल तरक्की पसंद होना लाज़मी है बल्कि उम्मीद के महल भी वह तामीर करता है, इन उम्मीदों के सहारे ही दुनिया चलती है ......

नाम तेरे ज़िन्दगी हम धर चले,
काम जो आए थे करने कर चले।
ढल चुकी शाम सूरज छूप गया,
और 'बिस्मिल' अब तो हम घर चले।

अब बात 'बिस्मिल' साहब के कुछ दोहों की। शेर और दोहों में जो एक बात यक़सा है, वह यह कि यहाँ बात दो लाइनों में ही पूरी हो जाती है, और दोनों ही एक खास डिक्शन के साथ कही जाने वाली काव्यविधाएँ हैं। मात्रा १३-११ मात्रा में कहे जाने वाले दोहे के व्यापक प्रभाव और असर के कारण ही कहा गया -

दीरघ दोहा अर्थ के आखर थोड़े आहि। अक्षर थोड़े और अर्थ अधिक।

और इस व्यापक अर्थ में रीति भी है नीति भी।

एक संदेश भी है और सबक भी। उद्धव महाजन 'बिस्मिल' कहते हैं.......

प्रेम की बानी बोलना सबसे अच्छा काम,
प्रेम ही से बन जाते हैं सारे बिगड़े काम।
कबीर ने मसी कागज़ छुओ नहीं,
कलम गह्यो नहीं हाथ।

कहकर भी मसी काग़ज कर्म को जो ऊँचाइयाँ दी उनतक

शायद ही कोई पहुँच सके | तुलसी, रहीम, रसखान से लेकर बिहारी के बाद आज तक दोहों में एकदम नया कहने की कोई गुंजाइश शायद नहीं है, लेकिन उसकी तलाश जारी है, और यही कवि कर्म है,

कागज़ कलम को हाथ ले मैंने लिखे हैं हर्फ,
मुझको हासिल हो गया गीत ग़ज़ल का शर्फ |

और लिखने का यह शऊर हासिल होना, भाग्य की बात है, 'बिस्मिल' सौभाग्यशाली है, उन्हें काव्य की कई विधाओं में कहने की कला हासिल है | अमीर खुसरो ने कहमुकरनियाँ कहीं है, इनको कहना -लिखना एक मुश्किल बात है, विषय के स्तर पर भी और शैली के स्तर पर भी इस विधा को लम्बे अन्तराल के बाद लौटते देखना एक सुखद उम्मीद है, और साथ ही नए विषय और प्रतीकों का आना भी स्वाभाविक है,

घर में नाचता-गाता आए,
और सबका वो दिल बहलाए
खुश हो सोनू मोनू बीवी
क्या सखी साजन ? न सखी टी. वी.

* * * * * *

हर नुक्कड़ पर भाषणबाजी,
और कहीं है आतिशबाजी,
मोड़ मोड़ पर चले हैं भाषण,
ऐ सखी मेला ? न इलेक्शन |

कवि के कलम में हाथों की पवित्रता विचार की उज्वलता और

भावना की व्यापकता है उसमें विस्तार की इतनी असीम संभावनाएँ हैं जिनमें मनुष्यता को हरपल बचाने की शक्ति है, ये शक्ति उद्धव महाजन 'बिस्मिल' को निरंतरता से मिलती रही है, और उनकी रचनात्मक सक्रीयता के चलते वह हमेशा कायम रहेगी इसी दुआ और शुभ कामना के साथ उनके 'मिट्टी की खुशबू' काव्यसंग्रह का काव्यजगत में स्वागत और अभिनंदन है।

शुभेच्छु !

डॉ. सुनील केशव देवधर,
कार्यक्रम अधिकारी (हिंदी विभाग)
आकाशवाणी पुणे दिनांक १०/०६/२००७
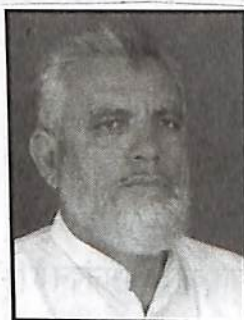
"पेश-लफ्ज"

जनाब उद्धव महाजन 'बिस्मिल' की शायरी का नया मजमुआ "मिट्टी की खुशबू" इशाअत के मराहिल से गुज़र कर आपके मुतालए की मेज़ पर मौजूद है ये मजमुआ जिसमे हर रंग के सुखन के फूल खिले हैं, शायरी की मुख्तलिफ असनाफे - सुखन का एहाता करने वाले इस मजुमुए में आपको एक आम आदमी के जज़्बात की तरजुमानी मिलेंगी, हक़ीक़त के रंग मिलेंगे मोहब्बत की तरंग मिलेगी खुशियों का खज़ाना मिलेगा, ग़म की दौलत मिलेगी, सच्चाई और सदाक़तों की रहगुज़र से आपका सामना होंगा, इन रास्तों पर चलकर आप को आगे कूच करना है, मंज़िल अभी बहुत दूर है 'बिस्मिल'साहिब के लिये भी अभी मंज़िल नहीं आई है, एक सच्चे और संजीदा फनकार के लिये मंज़िल कभी नहीं आती उसे तो बस चलना होता है, आगे कूच करना होता है, ज़िन्दगी की आखरी साँस तक कलम का सफर जारी रहता है, ये सफर ज़िन्दगी और जिन्दा दिली की दलील है, 'बिस्मिल' साहिब इस सच्चाई को जानते भी हैं और मानते भी हैं और इस पर अमल भी करते हैं, उनकी यही खूबी उन्हे हमेशा और हर तरह के शेर कहने का हौसला देती हैं अब वो तखलीके - सुखन के मैदान में महज़ ग़ज़ल के रदीफ और काफियों ही में क़ैद होकर नहीं रह गये बल्कि अदब के दूसरे मैदानो में भी अपने कलम के जौहर दिखा रहे हैं और अपने अहसास की रोशनी लुटा रहे हैं|

कहते हैं कि ग़ज़ल मीर और ग़ालिब जैसे शायरों के हाथ नहीं लगी तो हमारे और आप के हाथ कहाँ से लगेगी, इसके बावजूद हम सब ग़ज़ल को मानने, उसको लुभाने और उसे अपना बनाने की जी तोड़ कोशिश में लगे हैं | यही कोंशिश 'बिस्मिल' साहिब भी कर रहे हैं | और वो खुद अपनी इस कोशिश पर खुश भी है, यही खुशी उनका इनाम हैं, और उनकी काविशों का माहसल भी | मैं 'मिट्टी की ख़ुशबू' की इशाअत पर उन्हे मुबारक बाद पेश करता हूँ|

नज़ीर फ़तेहपुरी -

'अपनी बात'

इल्मों- शेरो अदब की दुनिया का मैं अदना-सा मुसाफिर हूँ | 'मिट्टी की खुशबू' मेरा तीसरा शेरी मजमुआ है जिसे आपको सौंपते हुए मसर्रत महसूस हो रही है | इस मजमुए में, ग़ज़लें गीत, नज्में , कतआत, दोहे, माहिए, कहमुकरनियाँ और तिकड़ियाँ भी शामिल हैं | दिली कैफियत को अल्फाज़ के पैक़र में ढालकर आप तक पहुँचाने की कोशिश की है, पता नहीं ये अशआर आप के दिलों दिमाग तक मुंतक़िल करने में कामयाब हुआ या नहीं|

मेरा अदबी सफर "मेरा तसव्वूर" नज़्मों के मजमुए से शुरू हुआ | 'थोड़ा-सा आसमान' मेरा दूसरा ग़ज़लों का मजमुआ है, और इसकी इशाअत एक तारीख़ी इशाअत साबित हुई थी क्योंकि इसकी इशाअत के दौरान बिजली हम से रुठ गई थी | मोमबत्तियों की रोशनी में बेहतरीन तकरीरों का लुत्फ सामइन हज़रात उठा रहे थे | मेरे दिल की धडकने तेज़ हो रही थीं | मेरे उस्ताद "जनाब नज़ीर फतेहपुरी" साहब की ग़ज़ल के मतले की झलकियाँ मानो अहदे हाज़िर में मिलने लगी थी |

वह इसप्रकार है ....

पेश मंज़र पस-मंज़र से निराला देखा,
ग़म की दहलीज़ पे खुशियों का जनाज़ा देखा |
मेरी ग़ज़लों का मेहमाने खुसुशियों की जानिब

से पुरजोश खैर मक़दम होने लगा जिनमें, मोहतरम जनाब डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षितजी, डॉ. गजानन चव्हाण, डॉ. ले कर्नल व्ही.पी. सिंग, जनाब मुश्ताक़ काज़ी, हिंदी आंदोलन के सदरे-मोहतरम श्री. संजय भारद्वाज, जनाब मुनव्वर पीरभाई साहब और मेरे उस्ताद जनाब नज़ीर फतेहपुरी आदि मेहमानों ने पजीराई की इस इशाअत के जलसे की निज़ामत मेरे मित्र मरहूम जनाब मुश्ताक़ अरबजी ने बखूबी की थी | उनकी यादों को नहीं भूलाया जा सक़ता | 'मिट्टी की ख़ूशबू' मुख्तलिफ तसनिफों का मजमुआ है जिसमें मुन्तख़िब ग़ज़लें, नाअतें, दोहे, माहिए, कतआत्, नज़्म, गीत, कहमुकरनियाँ और तिकड़ियाँ शामिल हैं | मैं नहीं जानता के इनमें आला मेयार, नुदरत आफरीनी, नई तराक़ीब की फरावानी, वालेहाना तख़य्युल नग्मारेज़ी के दिलफरेब अनासिर है या नहीं मैं नहीं जानता | बुनियादी तौर पर मैं मराठी भाषी हूँ, लिहाज़ा मैं कह नहीं सकता कि मेरी ग़ज़लों से आप लुत्फ अंदोज़ होंगे या नहीं, मेरी नज़्मों में लताफत है या नहीं, और मेरे कतआत् दिलकश हैं या नहीं, गीत तरन्नुम रेज़ बन सके हैं या नहीं , दोहों में रिवायती चाश्नी आ सकी या नहीं, कहमुकरनियाँ और, तिकड़ियों पर पहली बार कलम चलाने की कोंशिश की है, आपसे गुज़ारिश है कि इनसे लुत्फ अन्दोज़ होने के साथ -साथ मेरी ख़ामियाँ तलाश कर मुझे उनसे वाकिफ़ कराएँ, कभी ज़बानी तौर पर या फिर ख़तो किताबत के ज़रिए आप आपना फर्ज़ अदा करें |

मैं उर्दू अदब के हल्के में मुसलसल कोशिशों एवं काविशों भरी राह से गुज़र रहा हूँ, मेरे उस्ताद मोहतरम जनाब नज़ीर

फतेहपुरीजी ने मुझपर काफी मेहनत की है, मूलतः मादरे ज़बान मराठी होने से तलफ़्फ़ुज़ ठीक करने से लेकर मुख्तसर और मुतरन्निम बहरों में ग़ज़लें कहने की खूबियों तक रहनुमाई की, मेरी हर सिन्फे सुखन के जादे-मुतय्यन करते समय खामियाँ तलाशकर मुझे समझाते रहे, व्याकरण की ग़लतियों से लेकर लफ्ज़ों- मानी की ग़लतियों से भी वाकिफ़ कराते रहे. आज मैं जिस मक़ाम तक पहुँच सका हूँ, वह उन्हीं की मुसलसल मेहनतों का नतिजा है | मैं उनका दिलों-जान से शुक्रगुजार हूँ|

अपनी इस मुख्तसर पुरबहार ज़िंदगी का एक उसूल मैंने इख्तियार किया है, मैं भगवद्गीता का शैदाई हूँ और भगवद्गीता के इस श्लोक की तरह .....

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन
मा कर्मफल हेतूर्भूमा ते संगोत्स्व कर्माणि |"

"अर्थात् इससे मेरा कर्म करने में ही अधिकार होवे, फल में कभी नहीं | और तू कर्मों के फल की वासनावाला भी मत हो, तथा तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न हो |" इसी से मिलती जुलती बात मेरे उस्ताद जनाब नज़ीर साहब ने कही है ......

"मैं होशियार दीवाना हुआ, हुआ न हुआ,
हवा के साथ रवाना हुआ, हुआ न हुआ,
हमारा काम कमन्दे उछालना है फक़त,
बुलंदियों पे ठिकाना हुआ, हुआ न हुआ |"

बस इन्हीं सब बातों पर अमल कर रहा हूँ, अतः

कुछ पाने की अभिलाषा में कुछ खोने का डर नहीं | मुसलसल कोशिशें और काविशें ही अपने हाथ में हैं, कामयाबी अपने हाथ में नहीं- 'कवि रहीम' भी यही कहते हैं......

"निज कर क्रिया रहीम कह, सीधी भावी के हाथ,
पाँसे अपने हाथ में, दाँव न अपने हाथ |"

आदमी को महद से लहद तक बस सीखते रहना चाहिए, इसी लिए जहाँतक संभव है, पढ़ना लिखना जारी है |

कहना न होगा कि आसमान को पा लेने की अभिलाषा के साथ, इस ज़मीन से जुड़े रहने में ही जीवन की सार्थकता है, मुझे इस मिट्टी से बेतहाशा प्यार है, क्योंकि इसी मिट्टी में मैं रचा बसा हूँ, इसकी सौंधी खुशबू से मन तरोताज़ा हो जाता है, मेरी हर रचना इसी मिट्टी की उपज है | इसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के हेतु मैंने अपनी इन रचनाओं का उनवान 'मिट्टी की खुशबू'रखा है, आशा है आपका दिलों-दिमाग इससे मुअत्तर होगा

इस मजमुए के लिए पेश लफ्ज़ एवं अभिमत लिखनेवाली हास्तियों में सबसे आला शख्सियतें-हैं, श्री.डॉ. दामोदर खडसेजी जो बँक ऑफ महाराष्ट्र के हिंदी के अदीब एवं हिंदी भूषण पुरस्कार से सन्मानित ऐसी शाख्सियत हैं, जिन्होंने इन रचनाओं का मुआइना कर के मुझे एक नई दिशा प्रदान की एवं प्रेरणा भी दी है, मैं उनके प्रति तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ|

दूसरी हरदिल अज़ीज शख्सियत का नाम जो कि हिंदी, उर्दू एवं मराठी के मशहूर हस्ताक्षर हैं, एवं आकाशवाणी के हिंदी

अधिकारी हैं डॉ. सुनिल केशव देवधर साहब जिन्होंने न केवल मेरी रचनाओं को पढ़ा बल्कि इनमें सुधारात्मक सूचनाएँ भी दीं, मैं उनके प्रति तहेदिल से शुक्रगुजार हूँ | और इनमें सब से अलग थलग हस्ती जेष्ठ कवियित्री श्रीमती प्रभा माथुरजी हैं जो मुझे एक छोटा भाई समझकर हौसला अफज़ाई भी करती हैं और कभी ग़लती कर जाऊँ तो खरी खोटी सुनाने में हिचकिचाती नहीं उन्होंने मुझे आशिशों से नवाज़ा है, एक बहुआयामी व्यक्तित्व है, जिन्होंने चंद पंक्तियाँ लिखकर मेरा मार्ग प्रशस्त किया है |

मैं उनके प्रति नतमस्तक होकर उनके प्रति धन्यवाद प्रकट करता हूँ | इन शाख्सियतों में सबसे बुजुर्ग हस्ती है, मोहतरम जनाब अतीक़ अहमद 'अतीक़' मालेगावी जो 'तवाज़ून' पत्रिका के प्रमुख संपादक हैं, जिन्होंने मेरी रचनाओं को पढ़कर मुझे एक नई दिशा प्रदान की, मैं उनके प्रति भी शुक्रगुज़ार हूँ | इनके अलावा प्रत्यक्ष रूप से भले ही इन रचनाओं के बारेंमें जिन्होने कुछ न लिखा हो पर मेरी रचनाधर्मिता को निरंतर सचेत करने वाली एक बुजुर्ग हस्ती है, मोहतरम जनाब 'दिलदार हाशमी 'साहब जिन्होंने मेरी कदम -कदम पर रहनुमाई की है, मैं उनके प्रति भी शुक्रगुज़ार हूँ |

मैं अन्त में अपने उस्ताद मोहतरम जनाब 'नज़ीर फतेहपुरी' जी के प्रति शुक्रगुज़ार हूँ कि जिन्होंने मुझे उर्दू अदब के मैदान में ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया, ईसके उबड़ खाबड़ एवं साफ सुथरे रस्तों से अवगत कराया, उनके पूरे परिवार के प्रति अगर मैं कृतज्ञता प्रकट न करूँ तो कृतघ्न कहलाऊँगा | इसके उपरांत मेरे हिंदी आन्दोलन के साथियों के प्रति भी जो मेरी पूरी शख़्सियत के दारोमदार हैं,

अध्यक्ष, श्री संजय भारद्वाजजी, श्रीमती सुधा भारद्वाज , कोषाध्यक्ष श्री अनिल अब्रोल, डॉ. मंजू चोपड़ा, मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' श्री नागेश शर्मा, श्री राकेश श्रीवास्तव और मेरे अजीज़ दोस्त एवं हिंन्दी आंन्दोलन के सदस्य जो मेरी हर मुश्किल में साए की तरह मेरा साथ निभाता रहा, श्री नंदकुमार मुळूक, सौ. पुष्पा मुळूक इसके अलावा मेरे मित्र रमेश कस्तूर लोट, तारीक़ अन्वर, गुलाम दस्तगीर जोड़ साहब जैसे दोस्तो ने मेरी हौसल अफज़ाई की उनके प्रति भी मैं शुक्रगुज़ार हूं|

मेरे अज़ीज मित्रों में श्री एस. के माली साहब , श्री पी.के महाजन साहब ,श्री भिमराव माली , श्री नकुल महाजन जो मेरे खान्देश माली मित्र मंडल के साथी हैं, जिन्होंने मेरी समय -समय पर सहायता करके मुझे उपकृत किया| अपने परिवार ख़ास तौर से अपनी शरीक़े हयात (अर्धांगिनी) और अपने बेटों एवं बहुओं के प्रति भी और अपने नवासे के प्रति भी आभारी हूँ क्योंकि जो वक्त मेरे पास उनके लिए था उसमें से कुछ लम्हें निकाल कर अपनी रचना 'मिट्‌टी की खुशबू' की सर्जना कर सका|

इसके अलावा मेरी हौसला अफ़ज़ाई करने में निरंतर अग्रसर रहने वाली हमारे एथेल गॉर्डन अध्यापिका विद्‌यालय की प्रिन्सिपल महोदया सौ. प्रतिभाताई म्हंकाळे और स्टाफ के प्रति भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मेरी सहायता की है| मैं श्रद्‌धेय श्री दाभोलकर सर मुख्य प्रचारक राष्ट्रभाषा सभा ,पुणे के प्रति भी शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होनें मेरी पुस्तक का प्रुफ रिडींग अपनी पैनी दृष्टि से करके उसको निखारा है| मैं 'सागर ग्राफिक्स' के श्री सागर तावरेजी का भी

शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मेरी रचनाओं को आकार प्रदान करने की भूमिका बखूबी निभाई | अंत में इस पुस्तक को अंजाम देने वाले मेरे उस्ताद एवं असबाक़ पब्लिकेशन के मुदीर जनाब नज़ीर फतेहपुरीजी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने अथक परिश्रमों से इसे रंग रूप से निखारा | अंत में सभी उर्दू-हिंदी प्रेमी मेरे साहित्यकार मित्रों के, एवं तमाम पाठकों के प्रति आभार !

धन्यवाद !

उद्धव महाजन 'बिस्मिल',
फ्लॅट नं A/२०२, कुमार प्रेसिडेन्सी,
मीरा नगर रोड, कोरेगांव पार्क,
पुणे : ४११००१
दूरभाष - ०२०-६४००६६१९

नाअत

मदीने की गलियों में हम जाने वाले,
चमक तुझसे पाएँगे हम पाने वाले।

शफाअत-का-रहमत का[1] मैं हूँ सवाली,
करम मुझपे फरमा दो फरमाने वाले।

मेरा दिल भी बन जाए मसकन[2] तुम्हारा,
मदीने में आराम फरमाने वाले।

अक़ीदत[3] के हाथों से दामन पसारे,
तेरे दर पे आए हैं सब आने वाले।

न छेड़ो अभी ज़िक्र खुल्दे बरी[4] का,
अभी तो मदीना है हम जाने वाले।

मयस्सर[5] हमें है बहारे मदीना,
नहीं फूल हम ऐसे मुरझाने वाले।

मसीहा तुम्हीं हो ज़माने के आक़ा[6],
तुम्हीं से है 'बिस्मिल' शिफ़ा[7] पाने वाले।

१.कामना, दया, मेहरबानी २. घर, निवासस्थान ३. श्रद्धा ४. स्वर्ग के द्वार ५. नसीब में होना, मिलना ६. स्वामी, मालिक ७. गुण, असर

नाअत

वो नुरानी[1] बातें ही सब बोलता है,
ज़बाने मोहंमद से रब[2] बोलता है|

उठो बहरे ताज़ीम[3] सर को झुका दो,
के आक़ा[4] केदर पर अदब[5] बोलता है|

तड़प मुझको आक़ा की तड़पा रही है,
जुदाई में दिल बा- अदब[6] बोलता है|

मुहंमद के शैदाई[7] की कुछ न पूछो,
वो सच बोलता है, वो जब बोलता है|

मोहंमद से बढ़कर नहीं कोई 'बिस्मिल',
अजम[8] बोलता है, अरब[9] बोलता है|

१.चमक दमक २.ईश्वर ३.झुककर सलाम करना ४. मालिक, स्वामी
५. शिष्टाचार, सम्मान ६. शिष्टाचार, सम्मान ७. चाहनेवाले
८. ईरान ९. अरबस्तान

नाअत

धूप से यूँ बचा लीजिए या नबी,
काली कमली उढ़ा दीजिए या नबी |

ग़म के मारे हुवे दे रहे हैं सदा,
कुछ हमारी ख़बर लीजिए या नबी |

प्यास से हम तड़पते हुवों के लिए,
कोई दरया बहा दीजिए या नबी |

हम गुनहगार है आप ही के हुज़ूर,
आप ही अब करम कीजिए या नबी |

है ये 'बिस्मिल' की बस इल्तजा[१] आपसे,
इस को अपना बना लीजिए या नबी |

१. प्रार्थना, बिनती

नाअत

कह दो चराग़े-नूर,[1] बुझाया न जाएगा,
ये दीने-मुस्तफा[2] है, मिटाया न जाएगा।

ऐसा रंगे हैं हम तो दरुदों के रंग में,
ये रंग अब किसीसे, छुड़ाया न जाएगा।

महबूबे-रब को दिल में बिठाया है इसतरह,
इसके सिवा किसी को बिठाया न जाएगा।

पहुँचाया जिसने दीन को सारे जहान में,
वो रहमते-तमाम को भुलाया न जाएगा।

महका दिया है आप ने सारें जहान को,
ऐसी सदाक़तों[3] को भुलाया न जाएगा।

'बिस्मिल' वहीं पे जा के गुज़ारुंगा ज़िंदगी,
मुझसे मदीना जा के फिर आया न जाएगा।

---

१. नूर का चराग(दीपक) २. महंमद पैंगंबर
३. सच्चाई

ग़ज़ल १

जाने मन जाने अदा जाने जहाँ समझा था मैं,
बेवफा भी है सितमगर ये कहाँ समझा था मैं |

ज़िंदगी को इक सुहानी दास्ताँ समझा था मैं,
फूल के संग ख़ार[1] भी है ये कहाँ समझा था मैं |

दास्ताँ माज़ी[2] की मुझसे देर तक कहते रहे,
वो सुहाने पल के जिनको बेजुबाँ समझा था मैं |

हादसों पर हादसे अब हो रहे हैं रातदिन,
हाए अपने शहर में अम्नो-अमाँ[3] समझा था मैं |

ग़ैर से मिलकर वो बोली बोलता है गैर की,
हमनवा[4] समझा था जिसको हमज़बाँ[5] समझा था मैं |

राज़ दिल के खोलती है अज़मतें[6] 'बिस्मिल' वही,
जिन हँसी आँखों को अपना राज़दाँ[7] समझा था मैं |

१.काँटें २.बीता समय, अतीत ३. शांति ४. आवाज में आवाज मिलानेवाला ५. एक ही जैसी भाषा बोलनेवाला ६. बडप्पन, बुजुर्गी, महत्ता ७. रहस्य या भेद की बात जाननेवाला

ग़ज़ल २

रफ्ता-रफ्ता[1] हौसलों ने रास्तों को छू लिया,
धीरे धीरे मैंने अपनी मंज़िलों को छू लिया।

दाद दे ऐ राहे- पुरख़ारे[2]- मुहब्बत दाद दे,
आबला पाइने[3] मेरी मंज़िलों को छू लिया।

मेरी सोचों की बुलंदी इस क़दर बढ़ने लगी,
ताक़ते-परवाज़[4] ने मेरी, परों को छू लिया।

जब से देखा है तेरा हुस्ने-सरापा जाने जाँ,
धड़कनों ने चाहतों के वलवलों[5] को छू लिया।

ज़िंदगी तेरे बिछड़ने का हमें कुछ ग़म नहीं,
ग़म है आँखों ने किसी के आँसूओं को छू लिया।

सारी जन्नत[6] की बहारें हो गईं उनपर फिदा,
दौलते - इमाँ[7] ने जिन काफिर[8] दिलों को छू लिया।

फासले जब दो दिलों के दरमियाँ 'बिस्मिल' बढ़े,
उम्र भर की चाहतों ने रंजिशों को छू लिया।

---

१. धीरे-धीरे २. काँटों से भरी राह ३. जिन पैरों में छाले पड़े हों ऐसे
४. उड़ने की ताकत ५. उमंग, आदेश ६. स्वर्ग ७. ईमान की दौलत
८. ईश्वर को न मानने वाला

ग़ज़ल ३

सितम दिल पर मेरे ढ़ाया बहुत है,
मुझे अपनों ने तड़पाया बहुत है।

बहूत मैंने दिया सहने चमन[1] को,
बहारों में मेरा चर्चा बहुत है।

तलाशे - रिज़्क[2] में हम घर से निकले,
अभी तक़दीर में फाक़ा[3] बहुत है।

वो आए और आकर चल दिए हैं,
ये दिल जिनके लिए तरसा बहुत है।

तुम्हारे गाल पर जो काला तिल है,
तुम्हारे हुस्न पर जँचता बहुत है।

बहा देते हैं चन्द वोटों की खातिर,
ग़रीबों का लहू सस्ता बहुत है।

खुदा के वास्ते अब लौट आओ,
दिले -'बिस्मिल' यहाँ तनहा[4] बहुत है।

१. बगीचे का आँगन २. रोजी-रोटी की तलाश
३. उपवास ४.अकेला

ग़ज़ल ४

दीप नज़र में उम्मींदो का जलते जलते -जलता है,
ना उम्मीदी का अंधियारा ढलते ढलते -ढलता है |

रंग बदलता है खुशियों का मौसम तो इक लमहे में,
दिल से ग़मों का मौसम लेकिन टलते -टलते टलता है |

नफरत का एक काँटा लोगों हो जाता है पल में जवाँ,
उल्फत का इक गुँचा लेकिन पलते -पलते पलता है |

कुछ वादों की गरमी से और कुछ दीद की ठंडक से,
प्यार का नन्हा पौधा दिल में फलते -फलते फलता है |

महजबीनों[१] से कह दो 'बिस्मिल' के थोड़ा सब्र करें ,
हुस्न का जादू दिलवालों पर चलते -चलते चलता है |

१. चंद्रमा के समान मुखवाला, बहुत सुंदर

ग़ज़ल ५

मेरी नज़र में तेरा इन्तज़ार बाक़ी है,
गुज़िश्ता रात का सारा खुमार[1] बाक़ी है।

मैं जिसको शहर में सहरा में ढूँढ़ता ही रहा,
मिलन के लमहों का वो इन्तज़ार बाक़ी है।

उसे ये ग़म के मैं आवाज़ दे के लौटा हूँ,
मुझे ये वहम मेरा एतबार बाक़ी है।

कहीं भी रहता मगर आफ़ियत[2] नसीब न थी,
तेरी ही दुनिया में दिल का क़रार[3] बाक़ी है।

बला से वो मुझे ठुकरा के जा चुके 'बिस्मिल',
के मेरे दिल में अभी उनका प्यार बाक़ी है।

१. नशे का असर २. आराम, सुख चैन

ग़ज़ल ६

दिल की कश्ती डूबो रही है शाम,
आँसुओं में भिगो रही है शाम।

क्या रवानी[1] है मेरे अश्कों में,
ऐसा लगता है रो रही है शाम।

थक के सूरज तो हो गया रूख़सत[2],
बंद कमरे में सो रही है शाम।

सर्द मौसम में गर्म अश्कों से,
अपना दामन भिगो रही है शाम।

याद किसकी ये आ गई 'बिस्मिल',
दिल में काँटे चुभो रही है शाम।

१. बहाव, तेजी, प्रवाह २. रवानगी, कूच, प्रस्थान, जो कहीं से चल पड़ा हो

ग़ज़ल ७

मुहब्बत की निशानी ढूँढ़ता हूँ,
मैं बिती ज़िंदगानी ढूँढ़ता हूँ।

नगर में गाँव में बस्ती में घर में,
मैं कुछ यादें पुरानी ढूँढ़ता हूँ।

समझ ले जो दिलों की दास्तानें,
मैं ऐसा यार जानी ढूँढ़ता हूँ।

बहा ले जाए जो एहसास दिल का,
ग़ज़ल में वो रवानी[1] ढूँढ़ता हूँ।

मैं कबतक धूप में जलता रहूँगा,
शजर[2] की सायबानी[3] ढूँढ़ता हूँ।

उगाकर फसल अपनी चाहतों की,
वफ़ाओं का मैं पानी ढूँढ़ता हूँ।

पहुँचते हैं जो 'बिस्मिल', मंज़िलों पे
मैं ऐसों की निशानी ढूँढ़ता हूँ।

---

१. बहाव, प्रवाह २. पेड़ ३. छाँव

ग़ज़ल ८

जागी आँखों का ख़्वाब है दुनिया,
किस कदर लाजवाब है दुनिया।

जिसके अंदर छुपे हुए हैं खार[1],
एक ऐसा गुलाब है दुनिया।

हर्फ़[2] इसके कभी न समझोगे,
एक ऐसी किताब है दुनिया।

चाहकर भी बयाँ नहीं होती,
एक गूँगे का ख़्वाब है दुनिया।

इससे उम्मीद मत करो 'बिस्मिल',
एक गुज़रता सहाब[3] है दुनिया।

१. काँटे २. अक्षर ३. बादल

ग़ज़ल ९

कौन कहता है के घर दे मुझको,
ख़ाली -ख़ाली -सा हूँ भर दे मुझको |

सोने चांदी की तमन्ना है किसे,
इक मुहब्बत का गुहर[1] दे मुझको |

बस यही सोचता रहता हूँ मैं,
कोई बरबाद न कर दे मुझको |

चाहे आँधी हो या तूफाँ आए,
सह सकूँ ऐसा जिगर दे मुझको |

धूप में ग़म की झुलस न जाऊँ,
साएदार ऐसा शजर[2] दे मुझको |

देखे हैरत से ज़माना 'बिस्मिल',
ऐसा जीने का हुनर[3] दे मुझको |

१. मोती २. पेड़ ३. कला

ग़ज़ल १०

दिल को मेरे आपकी उल्फत के सारे ग़म मिले,
फूल की चाहत में मुझको काँटे ही क्या कम मिले |

जाने किसका ये लहू था जो यहाँ धोया गया ,
मुझको बस्ती में सभी के आज दामन नम[1] मिले |

यूँ तो दुनिया में मुझे मिलते रहे हैं सब मगर,
जिनसे मिल के हो खुशी ऐसे बहुत ही कम मिले |

धूप में ग़म की पसीना रुख[2] पे यूँ सजने लगा,
जिस तरह खिलते कँवल से क़तरा-ए- शबनम[3] मिले |

ज़िंदगी में मुझको 'बिस्मिल' ये कमी खलने लगी,
रंग तो बेरंग थे सब लफ़्ज़ भी मुबहम[4] मिले |

१. भीगे हुए २. मुख ३. ओस कण की बूँदें ४. अस्पष्ट, संदिग्ध.

ग़ज़ल ११

लमहे तुम्हारी याद के पाले हुए थे हम,
खुद को तुम्हारे ग़म में संभाले हुए थे हम।

दुनिया किसी तरह भी मुआफ़िक[1] न थी तो फिर,
दुनिया को अपने रंग में ढाले हुए थे हम।

मंज़र वो सामने था के चुप रहना था मुहाल[2],
होठों पे अपने ताला-सा डाले हुए थे हम।

सूरज की रोशनी न सही, जुगनू[3] ही सही,
फिर भी हरेक दिशा को उजाले हुए थे हम।

करना ही इन्तज़ार हमें अब मुहाल था,
आमद[4] की दिल में आस को पाले हुए थे हम।

तक़सीम[5] करके उनको है 'बिस्मिल' हमें सुकून,
जिस दर्दो - ग़म को क़ल्ब[6] में पाले हुए थे हम।

---

१. अनुकूल २. असंभव ३. खद्योत ४. आने की
५. विभाजन ६. ह्रदय

ग़ज़ल १२

भीड़ में हूँ पर अकेला हूँ,
अपनी मंज़िल की सिम्त[1] बढ़ता हूँ।

अपने अपने ग़मों की दुनिया में,
वो भी तनहा है में भी तनहा हूँ।

मंज़िलें ग़म की तय नहीं होती,
बन के हमराह मैं तो चलता हूँ।

साथ ले ली सिपर[2] मुहब्बत की,
उसकी नफ़रत का वार सहता हूँ।

तुझसे टूटा जो राब्ता मेरा,
सारी दुनिया से रिश्ता रखता हूँ।

खुद से मिल के भी मैं उदास रहा,
आज हँस हँस के सब से मिलता हूँ।

उनकी यादें भी साथ छोड़ गईं,
इन दिनों मैं बहुत अकेला हूँ।

मुझको कुछ भी नज़र नहीं आता,
गम के कोहरे में जब से खोया हूँ।

१. दिशा २. ढाल

ग़ज़ल १३

कितने अजीब लोग मिले मुझको ख़्वाब में,
क्या क्या न अक्स[1] तैर रहे थे सराब में।

नज़रें जमी हुईं थीं मेरी हर्फ हर्फ पर,
पढ़ने लगा था जो न था लिख्खा किताब में।

उतरी अजीब रोशनी यूँ कोहसारों[2] पर,
लगता था जैसे मिल गई फिरदौस[3] ख़्वाब में।

हो जैसे माहताब[4] कोई बादलों के बीच,
चेहरा छुपा है उनका भी ऐसे नक़ाब में।

अंदाज उनका मेरी समझ में न आएगा,
मिलती कहाँ है उनसे नज़र अब हिजाब[5] में।

जीने केसाथ मौत का डर है लगा हुआ,
मिलते है जैसे ख़ार शगुफ्ता[6] गुलाब में।

'बिस्मिल' ये आस थी के मुझे ख़त लिखेंगे वो,
इक फूल रख के भेज दिया है किताब में।

१. प्रतिंबिंब २. पर्वत ३. स्वर्ग, वाटिका, बाग़ ४. चाँद
५. परदा ६. खिले हूए, विकसित

ग़ज़ल १४

मेरी चाहत का सिला देगी ये दुनिया एकदिन,
मुझको भी अपना बना लेगी ये दुनिया एक दिन।

बेअसर होगी नहीं मेरी दुवाएँ दोस्तो,
मुझको भी दिल में बसा लेगी ये दुनिया एक दिन।

मुझको चाहे महफिले बाला-ओ-बरतर[1] न मिले,
अपनी आँखों में बसा लेगी ये दुनिया एक दिन।

मुझको भी तौफीक़[2] जीने की अता[3] कर ए खुदा,
वरना मुझको भी मिटा देगी ये दुनिया एक दिन।

इसको मेरे जीने मरने से कोई मतलब नहीं,
नाव कागज की चला देगी ये दुनिया एक दिन।

तिश्ना लब[4] हूँ और हूँ मैं जाँ-ब-लब[5] 'बिस्मिल' मियाँ,
क़तरा क़तरा ही पिला देगी ये दुनिया एक दिन।

१.अच्छी महफिलें २. ईश्वर की कृपा, श्रद्धा, सामर्थ्य, शक्ति
३.प्रदान कर ४.प्यासे होंठ ५.जिसके प्राण होठों तक गए हों, मरणासन्न

ग़ज़ल १५

वो नफरत को बढ़ाना चाहता है,
मुहब्बत का बहाना चाहता है|

मुहब्बत का ठिकाना चाहता है,
वो मेरे दिल में आना चाहता है|

मुसलसल[1] दे के रंजो-ग़म की दौलत,
वो मुझको आज़माना चाहता है|

परिंदा[2] हो कि वो हो कोई इन्साँ,
कहीं अपना ठिकाना चाहता है|

ग़मों से वास्ता उसका पडेगा,
जो खुशियों का खज़ाना चाहता है|

वो रंजिश[3] दिल में अपने पालकर भी,
गले मुझको लगाना चाहता है|

जमी हैं मंज़िलों पे उसकी नज़रें,
बुलंदी पर ठिकाना चाहता है|

उसे मालूम है,डूबेगा, फिर भी,
समंदर में नहाना चाहता है|

ज़माने की अदाएँ कौन समझे,
हँसाकर भी रुलाना चाहता है|

घरा रहता है वो काँटों में 'बिस्मिल'
चमन दिल का खिलाना चाहता है|

---

१. लगातार, बार-बार २. पंछी ३. नाराज़गी

ग़ज़ल १६

क्या तोड़ने चला है तुझे कुछ पता नहीं,
गुलचीं[1] चमन में फूल अभी तक खिला नहीं।

नफरत बदल दूँ प्यार के फूलों में दोस्तो,
हाथों में मेरे ऐसा कोई मोज़ेज़ा[2] नहीं।

सब अपना अपना बोझ उठाने में हैं मगन,
एक-दूसरे की सिम्त[3] कोई देखता नहीं।

नफरत मुनाफ़िकों[4] से अज़ल[5] ही से है मुझे,
इस वास्ते तो तुमसे कोई वास्ता नहीं।

उस अंजुमन[6] में किसको सुनाऊँ मैं हाले-दिल[7],
'बिस्मिल' जहाँ पे कोई मेरा आशना[8] नहीं।

१. माली २. चमत्कार ३. दिशा में ४. द्वेश भाव रखने वाला, धर्मद्रोही
५. प्रारंभ, शुरूवात ६. महफिल ७. दिल का हाल ८. परिचित

ग़ज़ल १७

वो शर्फ़[1] बख्शेगा बेशक मेरी दुवाओं को,
खुदा है, बख़्श ही देगा मेरी ख़ताओं को।

चले तो आए हैं हम गाँव की तरफ लेकिन,
करेंगे याद बहुत शहर की फज़ाओं[2] को।

खुदा करे के न देखूँ मैं अपनी आँखों से,
भरी बहार में हँसती हुई खिज़ाओं[3] को।

थका-थका-सा है एहसास-ए-ज़िंदगी मेरा,
करूँगा याद मैं फिर भी तेरी वफ़ाओं को।

वहाँ तलक मैं पुकारूँगा तुझको ए 'बिस्मिल'
जहाँ तलक तू सुनेगा मेरी सदाओं[4] को।

१. यश, कामयाबी, गुण २. खुला या हराभरा मैदान, वातावरण, शोभा
२. पतझड़ ४. आवाज़ें

ग़ज़ल १८

(मो. रफी की याद में)

चाहे हिंदू हुवे या मुसलमाँ हुवे ,
उनकी आवाज़ पर सब ही हैराँ हुवे |

जादू ऐसा जगाया था दिलपर मेरे ,
देखते -देखते वो मेरी जाँ हुवे |

साज़-ओ-आवाज़ का इक सितारा था वो,
उसके नग्मों से रोशन दिलो-जाँ हुवे |

ऐसे फनकार[1] को मौत क्यों आ गई ,
बस यही सोचकर सब परीशाँ हुवे |

जिंदा जबतक थे दुनिया के मेहमान थे,
मौत आई तो जन्नत[2] के मेहमाँ हुवे |

उनकी खुशबू से 'बिस्मिल' महकते हैं दिल,
शाखे - गुल[3] थे रफी अब गुलिस्ताँ[4] हुवे |

१. कलाकार २. स्वर्ग ३. डाली का फूल ४. बगीचा

ग़ज़ल १९

वहाँ पर तो बहारों का समाँ है,
जहाँ पर तितलियों का कारवाँ[1] है।

ज़माना शौक से सुनता है जिसको,
वो मेरे आँसुओं की दास्ताँ[2] हैं।

किनारों से जो भटके हैं सफ़ीने[3],
तो मुश्किल से घिरे अब बादबाँ[4] है।

दिखाई दे रही है तीरगी[5] जो,
हमारी ज़िंदगी का ये धुआँ है।

ये मेरी रूह[6] में क्यों तश्नगी है,
नज़र के सामने दरयाँ रवाँ है।

ये कैसी राह पर रहबर[7] चले हैं,
न मंज़िल है, न मंज़िल का निशाँ है।

मुनव्वर[8] करती है जो नींद 'बिस्मिल',
हमारे ख्वाब की वो कहकशाँ[9] है।

१. तितलियों का समूह २. कहानी ३. नौकाएँ ४. जहाज का पाल ५. अंधःकार ६. आत्मा ७. मार्गदर्शक ८. उजली, प्रकाशमय ९. आकाशगंगा

ग़ज़ल २०

हरफ़ से हरफ़[1] मिलाओ तो कोई बात बने,
इल्म[2] का दीप जलाओ तो कोई बात बने।

झाँकता कोई नहीं दिल के शिग़ाफ़ों[3] में यहाँ,
ज़ख्म चेहरे पे सजाओ तो कोई बात बने।

मुंतज़िर[4] हूँ मैं तेरी राहों में साहिल की तरह,
मौजे-[5] की तरह से आओ तो कोई बात बने।

तेज़ रफ्तार है ये वक्त की रूक जाएगी,
तुम निगाहें न झुकाओ तो कोई बात बने।

यूँ तबस्सुम[6] से नहीं काम चलेगा 'बिस्मिल',
दिल में इक दर्द जगाओ तो कोई बात बने।

१. अक्षर से अक्षर २. ज्ञान ३. चीरा, दरार, छेद ४. इंतज़ार में
५. समंदर की लहर ६. मुस्कुराहट

ग़ज़ल २१

मेहरबाँ[1] मौसम अचानक क्यूँ सितमगर[2] हो गया,
फूल के जैसा था मंज़र[3] कैसे पत्थर हो गया।

हमला आवर[4] जब बिफरकर वो समंदर हो गया,
जो सुहाना था वो आलम पल में बंजर[5] हो गया।

अपनी क़िस्मत के सितारे इस तरह बदले जनाब,
जो खुशी की सेज थी वो ग़म का बिस्तर हो गया।

आब[6] में मोती नहीं और ख़ाक में सोना नहीं,
ऐसी ही महरूमियों[7] का सारा मंजर हो गया।

आ मिलाऊँ मैं तुझे अब मौत के आतंक से,
देख 'बिस्मिल' ये नज़ारा आज घर घर हो गया।.

---

१. कृपालू, दयालू २. अत्याचारी ३. दृश्य ४. हमला करनेवाला
५. अनऊपजाऊ ६. पानी ७. वंचनाएँ, विफलता

ग़ज़ल २२

एक अजब -सा सपना देखा करता था,
खुदको एक परिंदा[1] देखा करता था।

रोज खयाल इक आता था दिल में मेरे,
खुदको इक शहजादा देखा करता था।

प्यासे सूखे होठों पर थी एक हँसी,
सहरा[2] में भी दरिया देखा करता था।

भेस बदलकर प्यास बुझाता था सब की,
खुदको एक फरिश्ता[3] देखा करता था।

इतना कुछ मासूम था वो बचपन मेरा,
अपना पराया अच्छा देखा करता था।

आँख खुली तो ओझल था हरएक मंजर,
बंद आँखों से क्या - क्या देखा करता था।

क़तरा क़तरा मुझको पिलाया था उसने,
खुद को फिर भी प्यासा देखा करता था।

हीरे जैसा तरशा था इक इक पत्थर,
मिट्टी में भी सोना देखा करता था।

चारों जानिब खुशहाली थी 'बिस्मिल' जी,
हर चेहरा मैं हँसता देखा करता था।

१. पंछी २. खाली मैदान, जंगल ३. देवदूत

ग़ज़ल २३

बाक़ी जो कुछ है दोस्तो नापायदार[1] है,
बस जाविदाँ[2] तो एक ही परवरदिगार है।

पर्दा वो डाल देता है मेरे गुनाह पर,
कुछ ऐसा मेहरबान मेरा किरदगार[3] है।

मैं सच कहूँ कि मैं हूँ तेरे हक़ में आईना,
मेरी तरफ से क्यूँ तेरे दिल में गुबार[4] है।

जंग-ओ-जदल[5] ने सारे नज़ारे बदल दिए,
जन्नत था कल जो, आज वो शहरे-मज़ार[6] है।

ऐ दोस्त आ कि मिल के मुकद्दर बनाएँगे,
माहौल अपने हक़ में बड़ा साज़गार[7] है।

जो हुक्म होगा उसको बजा लाएगा ज़रूर,
'बिस्मिल' तो सिर्फ आपका ख़िदमत गुज़ार[8] है।

---

१. क्षणभंगुर, कमज़ोर २. अनश्वर ३.सृष्टिकर्ता, विधाता ४. द्वेश, मैल ५.लड़ाई, युद्ध ६.कब्रों का शहर ७. शुभ, ठीक ८. सेवक

ग़ज़ल २४

दिल के आँगन की कली जब वो खिला देती है,
सूने जीवन में वो हल-चल-सी मचा देती है।

दिल की दहलीज़[1] उजालों से सजा देती हैं,
याद बुझती हुई शम्मा को जला देती है।

ज़ख़्म जो तुमने दिए मुझको भले लगते है,
चोट लगती है जो दिल पे तो मज़ा देती है।

दिन में पलकों पे कोई ख़्वाब सजा लेता हूँ,
शाम ढलती है तो सागर का पता देती है।

कहीं मिल जाए अगर तुझको जहाँ में 'बिस्मिल'
कहना के राहे-वतन[2] तुझको सदा देती है।

१. प्रवेश द्वार २. वतन की राह

ग़ज़ल २५

वो ग़म का रास्ता बस आज कटने वाला था,
खुशी की सेज़ से मैं भी लिपटने वाला था।

बहुत बिखेरा यहाँ मुझको दुनिया वालों ने,
मेरा वजूद[1] अगरचे सिमटने वाला था।

उसी को ढूँढ़ता रहता था मैं तो ख़्वाबों में,
अजीज़ था वही मंज़र जो हटने वाला था।

तलाश जिसकी थी वह शख्स मिल गया वरना,
मैं जुस्तजू[2] की तमन्ना[3] से हटने वाला था।

खुद अपना रास्ता मैंने बदल दिया वरना,
कहीं पहाड़ राहों से हटने वाला था।

निशाना बाँध के किसने बचा लिया मुझको,
वह बाज मुझपे ही 'बिस्मिल' झपटने वाला था।

१. आस्तित्व २. तलाश ३. इच्छा

ग़ज़ल २६

ज़माने से तुम यूँ न हारा करो,
मुहब्बत में सबकुछ गवारा करो।

ये रिश्ते तो बस नाम के रिश्ते हैं,
तआल्लुक[1] में इनको गवारा[2] करो।

ये किसने कहा था कि सच बोल दो,
यहाँ, अब अकेले गुज़ारा करो।

बुजुर्गों का साया तो है लाज़मी,
घरों की छतों को सँवारा करो।

गुनाहों की दुनिया में जन्नत[3] नहीं,
ज़रा अपना दामन सँवारा करो।

तुम्हें गर यहाँ कामयाबी मिले,
तो यारो का सदक़ा[4] उतारा करो।

१. संबंध २. योग्य ३. स्वर्ग ४. उतारा, खैरात

ग़ज़ल २७

दीए सा तुमको जलना चाहिए था,
किसी के साथ चलना चाहिए था।

डुबोया आँसुओं में खुद को क्यूँकर,
दुखों से अब उबरना चाहिए था।

सबों के साथ गर रहना था तुमको,
ज़रा सा बच के चलना चाहिए था।

घिरा था बादलों के बीच कब से,
अभी सूरज निकलना चाहिए था।

तुम्हें गर चाहिए थे मोती उजले,
समंदर में उतरना चाहिए था।

अंधेरों को है आदत साज़िशों[१] की,
उजालों को निकलना चाहिए था।

तुम्हारी बात बिल्कुल सच थी 'बिस्मिल',
मगर लहज़ा[२] बदलना चाहिए था।

१– षढ़यंत्र २– ढ़ंग

ग़ज़ल २८

मुझे अपने दिल में बसाने से पहले,
ज़रा सोच लो दिल लगाने से पहले |

पसीना क्यूँ आया है ठंडी हवा को,
गुलिस्ताँ में कलियाँ खिलाने से पहले |

ज़रूरी है काँटों से दामन बचाना,
मुहब्बत का दामन बढ़ाने से पहले |

सजा क्यूँ मुहब्बत की देने लगे हो,
ज़रा सोच लो ज़ुल्म ढ़ाने से पहले |

मुनासिब[1] नहीं तोड़ना दिल किसी का,
खुदारा[2] मुहब्बत निभाने से पहले |

बुज़ुर्गो की अज़मत[3] का तुम ध्यान रखना,
उन्हें कह दो 'बिस्मिल' भुलाने से पहले |

१. उचित २. खुदा के लिए ३.बडप्पन

ग़ज़ल २९

ज़ख्म सारे भर चुके इज़हार में क्या रह गया,
दिल ही जब टूटा तो फिर इक़रार[1] में क्या रह गया।

जो निहाँ था दिल में वो नज़रों ने ज़ाहिर कर दिया,
छोड़ दो जाने भी दो इन्कार में क्या रह गया।

यूँ तेरे तीरे नज़र ने मुझको घायल कर दिया,
सब हुए बेकार अब तलवार में क्या रह गया।

जिंदगी के जाम में पिघली है सारी तल्ख़ियाँ[2],
आग हर सू[3] लग चुकी अफ़कार में क्या रह गया।

टूट कर बिखरी है सारी कश्तियाँ साहिल पे अब,
फेंक दे ए नाखुदा पतवार में क्या रह गया।

उड़ते लमहों को पकडना है फ़क़त[4] नादानियाँ,
सारे पंछी उड़ गये अश्जार[5] में क्या रह गया।

शाम भी ढलने लगी खबरें पुरानी हो गई,
पढ चुके हो हर खबर अख़बार में क्या रह गया।

बैठ जाओ तुम अभी इस पेड़ के साए तले,
पाँव में छाले पड़े रफ्तार[6] में क्या रह गया।

ये दुवा तो तेरे होठों के शफाखाने में है,
मर रहा हूँ अब यहाँ गुफ्तार[7] में क्या रह गया।

कर चुके हो जुल्म सारे तुम यहाँ 'बिस्मिल' मियाँ,
भेद सारे खुल चुके किरदार[8] में क्या रह गया।

---

१. स्वीकार २. चिंताएँ ३. हरतरफ ४. व्यर्थ ५. पेंडों में ६. गति
७. बातचीत ८. चरित्र

ग़ज़ल ३०

कर न पाएगा यहाँ कोई भी शादाब[1] हमें,
जबतलक आते नहीं जीने के आदाब[2] हमें।

बहते पानी में यहाँ अक्स[3] ठहरता ही नहीं,
याद आता है फ़क़त गाँव का तालाब हमें।

हमको मालूम नहीं कौन सा रिश्ता अपना,
ढूँढ़ ही लेते हैं इस शहर के अहबाब[4] हमें।

हरतरफ पानी ही पानी नज़र आता है यहाँ,
कर दिया एक ही क़तरे ने जो सैराब[5] हमें।

दिन मिटा देता है हर ख्वाब की ताबीर[6] मगर,
रात दिखलाती है फिर कोई नया ख़्वाब हमें।

कितने मौसम यहाँ आ -आ के गए हैं 'बिस्मिल'
कोई मौसम न कभी कर सका शादाब[7] हमें।

१. प्रसन्नता २. शिष्टाचार ३. प्रतिबिंब ४. मित्र ५. हरा भरा
६. परिणाम, फल ७. प्रसन्न

ग़ज़ल ३१

ऐसा नहीं के हमको सहारा कभी न था,
ग़म है फ़क़त के ग़म का किनारा कभी न था।

हम जिसके साथ -साथ थे उसके कभी न थे,
जो साथ था हमारे हमारा कभी न था।

कुछ फर्ज़ मेरा रास्ता रोके खड़े रहे,
वरना यहाँ पे रहना गवारा कभी न था।

तुम क्या मिले के मेरी तो दुनिया सँवर गई,
वरना जहाँ में कोई सहारा कभी न था।

हमको वो याद आता है ये सच तो है मगर,
ये शहर जिसमें कोई हमारा कभी न था।

हम पे तो थी इनायते[1] परवरदिगार[2] की,
गर्दिश[3] में इसलिए तो सितारा कभी न था।

जो जा रहे है रूठ कर, जाए वो शौक से,
'बिस्मिल' हमारा उन पे गुज़ारा कभी न था।

---

१. कृपा २. ईश्वर ३. घुमाव, चक्कर

ग़ज़ल ३२

सपने आते नहीं सलोने से,
फायदा अब नहीं है सोने से।

तीरगी[1] छा गई है हर जानिब,[2]
शहर के बेचिराग़ होने से।

लोग मसरूफ[3] हो गए शायद,
शोर सुनता हूँ कोने -कोने से।

भेद जितने थे खुल गए सारे,
इक तेरे अपने साथ होने से।

पड़ गई माँद महफिले-हस्ती,
एक 'बिस्मिल' तेरे न होने से।

१. अंधःकार २. हरतरफ ३. व्यस्त

ग़ज़ल ३३

नए मिजाज़ में ढलता हुआ नज़र आया,
तमाम शहर बदलता हुआ नज़र आया।

अँधेरे ग़म के निगलता हुआ नज़र आया,
चराग़ खुशियों का जलता हुआ नज़र आया।

ख़राब वक्त पड़ा हम पे जिस घड़ी यारो,
हरएक शक्स बदलता हुआ नज़र आया।

जहाँ कहीं भी चमक उट्ठी प्यास 'बिस्मिल' की,
वही पे चश्मा[1] उबलता हुआ नज़र आया।

---

१. पानी का स्त्रोत

ग़ज़ल ३४

मुश्किलें लाख हों लेकिन नहीं डरना प्यारे,
हौसला बाँध के हर रह से गुज़रना प्यारे।

तेरे अतराफ़[1] जो दीवार उठा दे कोई,
फाँदकर उसको वहाँ से तू गुज़रना प्यारे।

लाख मालूम हो झूठे हैं दिलासे फिर भी,
तिनका -तिनका तू कभी भी न बिखरना प्यारे।

तपते सूरज की तरह दिन तो गुज़र जाएगा,
फर्ज़ की राह पे चलने से न डरना प्यारे।

सर कटा देना तू इस देश की ख़ातिर 'बिस्मिल'
राहे-जन्नत[2] की कभी चाह न करना प्यारे।

---

१. इर्द गिर्द २. स्वर्ग की राह

ग़ज़ल ३५

घर न कोई मकान है यारो,
हरतरफ इक मचान है यारो|

जानता हूँ के ज़िंदगी क्या है,
सिर्फ वहमो - गुमान है यारो|

और तो कुछ नहीं है मेरे पास,
एक नन्ही -सी जान है यारो|

एक दिन ये ज़रूर टूटेगी,
उलझनों की चटान है यारो|

अब तो मुझसे चला न जाएगा,
उम्र भर की थकान है यारो|

रोशनी गर न हो तो ये दुनिया
एक अंधा मकान है यारो|

जान अपनी संभाल कर रखना,
"जान है तो जहान है यारो|"

वो अभी है अभी नहीं 'बिस्मिल'
धूप का सायबान[1] है यारो|

---

१. छत

ग़ज़ल ३६

वो अगर हों तो रहे जाहो - अमारत[1] वाले,
हम भी कुछ कम नहीं खुद्दार[2] तबीयत वाले।

है चुभन फूल में काँटों में वफा है शायद,
अब के मौसम में हैं दुश्मन भी जलालत[3] वाले।

लोग शोहरत के लिए जान दिया करते हैं,
और इक हम हैं जो मिट्टी की हिफाज़त[5] वाले।

मेरी ग़ज़लों में छलकते हुए जज्बात मेरे,
और क्या तुमसे कहूँ हैं वो क़राबत[6] वाले।

मेरे नज़दीक वो इतना तो न रहता था कभी,
राज़ शामिल हैं मुहब्बत की लताफत[7] वाले।

जलते मौसम में जिसे मिलता है ठंडा साया,
शामिले-हाल बुजुर्गों की रफ़ाक़त[8] वाले।

हो गया अपने ही जज़्बात से महरुम ये दिल,
हम सलामों के ही रिश्तों की हिक़ायत[9] वाले।

जो भटकते हैं मेरे शहर में तनहा 'बिस्मिल'
कुछ न पाएँगे जहाँ में ये कहालत[10] वाले।

---

१. पैसेवाले २. स्वाभिमानी ३. श्रेष्ठता ४. कुरान का पाठ करनेवाले
५. सुरक्षा ६. समीपता ७. प्रसन्नता, खुशी ८. मेल जील ९. कहानी, किस्सा १० काहिली, सुस्ती

ग़ज़ल - ३७

शाख से टूटे हुए पत्तों पे अब सोचेंगे क्या,
"मौत की आँखों में आँखें डालकर देखेंगे क्या |"

मिसले -सोना [१] आग में जलकर जो कुंदन बन गए,
ज़िंदगी के इम्तेहाँ में फिर उन्हें परखेंगे क्या |

डगमगाता है हवा के सामने जिनका वजूद [२],
लोग ऐसे, ज़द [३] पे तूफाँ की भला ठहरेंगे क्या |

दश्ते-ज़ुल्मत [५] से गुज़रते हैं यहाँ जो रात दिन,
हौसले अम्नो -अमाँ [४] के वो यहाँ पाएँगे क्या |

जो बहे हैं दर्द बन बन कर फिराक़े-यार [६] में ,
आँख के आँसू भला घर लौट कर आएँगे क्या |

जो लगे हैं पाक़ [७] दामन पर तेरे 'बिस्मिल' मियाँ ,
आँसुओं से दाग़ दामन के भला धोएँगे क्या |

---

१. सोने की तरह २.आस्तित्व ३.नोक या किनारा ४.शांति ५.जंगल क अंधियारा ६.प्रेमी का वियोग ७. पवित्र

ग़ज़ल - ३८

दिल में बसे दिलदार का आलम,
थोड़ा दिलकश थोड़ा बरहम[1]।

हुस्न है जैसे शोला ओ शबनम,
आँखें भी हैं, पुरनम -पुरनम[2]।

जुल्फ बरहना[3] आँख में शबनम,
रूप है उसका मुबहम- मुबहम[4]।

सामने जैसे है वो मुजस्सम[5],
दिल की सदा[6] भी मद्धम-मद्धम।

हुस्न भी तनहा इश्क भी तनहा,
बदला -बदला सारा आलम।

दिल की अब दुनिया है मेरी,
थोड़ी बरहम[7] थोड़ी मुनज़्ज़म[8]।

रंजो-ग़म को भूल जा 'बिस्मिल',
इनके सिवा भी ओर है आलम।

---

१. चकराया हुआ, नाराज २. गीली-गीली (भीगी-भीगी) ३. खुली हुई ४. अस्पष्ट, संदिग्ध ५. साकार ६. आवाज़ ७. चकराया, कृद्ध, नाराज़ ८. संगठित

ग़ज़ल - ३९

सुकुने - दिल¹ हो मेरा और आरज़ू तुम हो,
जहाँ में इश्क के मारों की आबरु तुम हो।

तुम्हारा हुस्न सरापा² बहार का मंज़र,
जिधर भी देखूँ उधर मेरे रुबरू³ तुम हो।

जो एक राज की मानिंद⁴ है मेरी नज़रों में,
जिसे समझ न सकूँ ऐसी गुफ्तगू⁵ तुम हो।

वहीं सुलगते रहें आँख से नहीं छलके,
उन आँसुओं से भरा जाँ बलब⁶ सुबू⁷ तुम हो।

बिछड़ते वक्त जो महसूस कर रहा था मैं,
वहीं फ़ज़ा है अभी और चारसू⁸ तुम हो।

ग़ज़ल में ढल न सकी, लाख कोशिशें की हैं,
हरेक सिन्फ में "बिस्मिल" की आरज़ू तुम हो।

१. दिल का चैन, आराम २. संपूर्ण ३. आमने - सामने ४. जैसा
५. बातचित ६. लबालब भरा हुवा ७. प्याला ८. चारों ओर.

ग़ज़ल - ४०

इन्साँ बदलते रहते हैं, आमाल[1] की तरह ,
हर शय गुजश्तनी है महो-साल[2] की तरह |

यूँ बेसबब किसी को कोई चाहता नहीं,
तुझमें ज़रूर बात है तमसाल[3] की तरह |

क्या कुछ किया न खुद को मिटाने के वास्ते,
मैंने कफ़न को ओढ़ लिया शाल की तरह |

अक्से -बदन है या किसी झील का कँवल,
शफ़्फ़ाफ़[4] पानियों में है इक डाल की तरह |

अपनी नज़र में हूँ मैं बुलंदी पे आजकल,
उड़ता हूँ आंधियों में परो-बाल[5] की तरह |

आकर मेरी गिरफ्त[6] में वो ऐसे निकल गया,
'बिस्मिल' हो जैसे कोई महो-साल की तरह |

---

१. कार्य, कार्यकलाप, आचारण, चरित्र २. महीने और साल
३. उपमा, मिसाल ४. स्वच्छ, निर्मल ५. बाल और पर
६. घेरे में, (बाहों मैं)

ग़ज़ल - ४१

पल में बन जाता हूँ मैं पल में बिखर जाता हूँ,
इक फूसूँ की तरह मैं फिर से उभर जाता हूँ,

जब भी सोने की तरह तप के निखर जाता हूँ,
खुद को मिलने के लिए खुद से गुज़र जाता हूँ।

बात पे उसकी भला कैसे मुझे आता यक़ीं,
खुद ही मैं अपने इरादों से मुकर जाता हूँ।

चाँद बन जाता हूँ मैं अपने ही ग़म की शब का,
और कभी बन के सितारों सा बिखर जाता हूँ।

चाँद धरती पे पड़ा मुझको बुलाता है बहुत,
और मैं हूँ के बुलंदी पे ठहर जाता हूँ।

क्या तआल्लुक है तेरी ज़ात से मेरा सूरज,
तू जिधर जाता है क्यों मैं भी उधर जाता हूँ।

यें मेरा साया जो रहता है मेरे साथ सदा,
जाने क्या बात है मै उससे ही डर जाता हूँ।

सतह पर कोई भी पत्थर न ठहर पाएगा,
एक तिनके की तरह मैं तो उभर जाता हूँ।

कोई आँचल या किसी पेड़ का साया 'बिस्मिल',
मिल ही जाती है पनाहें तो ठहर जाता हूँ।

---

१. जादू २. रात का ३. ऊँचाई ४. संबंध ५. पृष्ठभाग

ग़ज़ल - ४२

आँख में इक पल ही ठहराए गए,
ख़्वाब कैसेकैसे दिखलाए गए|

नफरतों के ख़ार फैलाए गए,
सारे रिश्ते नाते ठुकराए गए,

लफ्ज़ की उरयानियत[1] को क्या कहूँ,
जामे रुसवाई[2] के पहनाए गए|

क़हक़हों[3] से हो गई खाली मुड़ेर,
कुछ न कह के मेरे हमसाए गए|

मैं परिंदा शाख पर बैठा रहा,
यार मेरे पंख फैलाए गए|

सुबह का भुला हूँ घर लौटा नहीं,
सहन[4] के उस पार ही साए गए|

आँसुओं से भर गए थे ये नयन,
आईने में चेहरे धुंधलाए गए|

खो गए बीती रुतों की धूंद में,
फूल पेड़ों पर ही मुरझाए गए|

घिर गए हम तो प्रणय में इस तरह,
इस किले के द्वार खुलवाए गए|

याद 'बिस्मिल' हम को वो दिन आगए,
ख़्वाब की सूरत जो बिखराए गए|

१. नंगापन २. बदनामी ३. शोरगुल ४. आँगन

ग़ज़ल - ४३

सियाहियों[1] में जो साया छिपा -सा लगता है,
वो रोशनी में मुझे आईना -सा लगता है|

ये सारे फूल बिछा दूँगा उसकी राहों में,
वो शख़्स मुझको किसी देवता -सा लगता है|

बहुत हँसी है तेरे खद्दो-खाल भी लेकिन,
तिरा ज़मीर[2] कहाँ आईना -सा लगता है|

जो मुझको भूल गया एक हादसे[3] की तरह,
मगर मुझे तो वो दिल आशना -सा[4] लगता है|

बहुत फरेब दिया करती हैं ये आवाजें,
हर इक सदा पे दरे-दिल खुला -सा लगता है|

क़ीदतों[5] की निगाहों से जब मैं देखता हूँ,
हर एक शख्स मुझे देवता -सा लगता है|

बहार भेजी है उस शख्स ने खतों में मुझे,
के हर एक लफ़्ज़ शगुफ्ता[6] हवा -सा लगता है|

ये कह के खुद को मैं समझाता रहता हूँ 'बिस्मिल'
जो बेवफा है मुझे बावफा -सा लगता है|

---

१. अंधःकार २. सद्सद् विवेक ३. दुर्घटना ४. परिचित
५. श्रध्दा ६. खिले हुए

ग़ज़ल - ४४

उनसे कुछ बात हो गई होगी,
ज़ीस्त[1] सौग़ात[2] हो गई होगी।

एक मुद्दत से बेख़बर है वो,
जाने क्या बात हो गई होगी।

याद उनकी मेरे लिए यारो,
शाम - ए - ज़ुल्मात[3] हो गई होगी।

वो ख़फ़ा है तो क्यों हैं आखिरकार,
मुझसे क्या बात हो गई होगी।

उसके वादों का भूलना ऐसा,
रात की बात हो गई होगी।

जो है महरुम[4] तेरे कदमों से,
राहे - ज़ुल्मात[5] हो गई होगी।

एक फितरत[6] जो देखी 'बिस्मिल' की,
वो तो इक ज़ात हो गई होगी।

---

१. ज़िंदगी २. उपहार, भेट ३. अंधियारी ४. वंचित
५. अंधियारी राह ६. स्वभाव

ग़ज़ल - ४५

फरेबे-हिज्र[1] का मारा हुआ नज़र आया,
जमाने भर का सताया हुआ नज़र आया।

जिसे खिज़ाओं[2] ने रक्खा था अपने साए में,
वो फूल जैसे महकता हुआ नज़र आया।

जबीं[3] पे ऐसी चमक छा गई थी उस लमहा,
के चाँद जैसा चमकता हुआ नज़र आया।

जो ज़िंदगी में मेरा हमसफर रहा बरसों,
वो एक साया सा चलता हुआ नज़र आया।

जिसे मैं ढूँढ़ता रहता था इधर-उधर 'बिस्मिल',
वो मेरे दिल में उतरता हुआ नज़र आया।

१. वियोग का कपट, छल   २. पतझड़   ३. माथा, पेशानी

ग़ज़ल - ४६

हुस्न भी इश्क भी जवानी भी,
और रंगीन है कहानी भी|

राख होने में देर कब लगती,
ज़ीस्त[1] इन्सान की है फ़ानी[2] भी|

इस अदा का तेरी जवाब नहीं,
हुक्मरानी भी सरगरानी भी|

दिल की दुनिया ये मेरी बरहम[3] है,
आशिक़ी है ये नागहानी[4] भी|

दिल मेरा जब खुशी लुटाता है,
ग़म की करता है पासबानी भी|

लाख इन्कार है मुहब्बत से,
है निगाहों में बदगुमानी[5] भी|

दिल के अरमान अब मचलते हैं,
इश्क में होगी कामरानी भी|

देख दिल के सियाह खाने में,
जख्में - पिनहाँ[6] की है निशानी भी|

कौन क्या सोचता है उल्फत[९] में,
कुछ सुनूँ मैं तेरी जुबानी भी|

अपनी मासूमियत के चक्कर में
हो गई वो नज़र सयानी भी|

दिले- नादान तेरे बारे में,
लोग कहते हैं इक कहानी भी|

हम बनाएँगे इक नई दुनिया,
हो गई अब तो ये पुरानी भी|

रूप हैं ज़िंदगी के यह 'बिस्मिल',
ज़िंदगी आग भी है पानी भी|

१. ज़िंदगी २. नश्वर ३. नाराज़, क्रोधित ४. अचानक ५.संदेह, असंतुष्ट ६. सफलता ७. अंधःकारमय स्थान ८. छिपा हुआ ९. प्रेम

ग़ज़ल - ४७

नफ़रत है जिसके दिल में मनाया न जाएगा,
उस दोस्त को तो दिल में बसाया न जाएगा।

जाते हो नज़रें फेरकर कोई गिला नहीं,
जाएँगें हम जहाँ से तो आया न जाएगा।

वो रंगों -बू[1] हो या के हो तितली का काफिला[2],
इस रौनके-चमन को मिटाया न जाएगा।

कोसेकुजाह[3] के रंग जो बिखरे फज़ा में हैं,
कुदरत के इस फुसूँ[4] को भुलाया न जाएगा।

हम लोग तेरा जिक्र अभी कर ही रहे हैं,
ए बादे-सबा[5] तुझसे क्या आया न जाएगा।

जागा है गमे-हिज्र[6] में वो सुबह तलक दोस्त,
'बिस्मिल' को नींद से अब जगाया न जाएगा।

१. रंग ओर खुशबु २. समुदाय ३. इंद्रधनुष्य ४. जादू
५. प्रात:कालीन हवा ६. वियोग का ग़म

ग़ज़ल - ४८

कबतलक अब लेके बैठे खाली पैमाने[1] को हम,
हैं ये बेहतर के लगा दें आग मैख़ाने[2] को हम |

जिंदगी तो अब गुज़र जाएगी इस अंदाज़ से,
बस तरसते ही रहेंगे आब और दाने[3] को हम |

क्या करें अब प्यार हमसे वो तो करता ही नहीं,
हो गए तैय्यार उसके दर पे मर जाने को हम |

अक्ल हम क्यूँ खो चुके थे इस जुनूने- इश्क[4] में,
अपना जो समझा किए थे एक बेगाने को हम |

उनको पाने की तमन्ना को भी क्यूँ ना छोड़ दें,
हाँ मुनासिब[5] है भुला के चल दें वीराने को हम |

मुफलिसी[6] और ये मज़ाहिर[7] हैं नज़र के सामने,
एक सादा मर्ग समझे ऐसे मर जाने को हम |

कौन 'बिस्मिल' करता है सिज़दा[8] बुतों के सामने,
हाँ मुनासिब है के छोड़ें आज बुतखाने को हम |

---

१. प्याला(शराब मापने का मापदंड) २. शराबखाना ३. अन्न और पानी
४. इश्क का उन्माद ५. उचित ६. गरीबी ७. प्रदर्शन
८. झुककर सलाम करना

ग़ज़ल - ४९

नाम तेरे ज़िंदगी हम धर चले,
काम जो आए थे करने, कर चले।

आँख से ओझल वो मेरी क्या हुए,
आँख मेरी आज वो नम कर चले।

साक़िया[1] यूँ दौर ये चलते रहे,
जबतलक बस चल सके सागर चले।

इश्क की ये ज़िंदगी क्या ज़िंदगी,
ग़मज़दा[2] को शादमाँ[3] भी कर चले।

हम मुसाफिर इस जहाँ से चल पड़े,
जिसतरह से इश्क के खूगर[4] चले।

जिंदगी क्या इक बला है दोस्तो,
जिसतरह हो हम तो बस जीकर चले।

मत जला दिल मेरा दीपक की तरह,
मेघ का सरगम यहाँ क्यूँकर चले।

ढल चुकी है शाम सूरज छुप गया,
और 'बिस्मिल' हम भी अपने घर चले।

---

१. शराब पिलानेवाला २. दुखी ३. प्रसन्नता ४. चाहनेवाले

ग़ज़ल - ५०

जो खुशी के गीत गाए कोई ऐसा न मिला,
सारे अपने थे मगर कोई शनासा[1] न मिला।

बाँध कर सर पे कफन हर कोई निकला था मगर,
एक सर भी हम को आमादा-ए-सौदा[2] न मिला।

जिसको भी देखा यहाँ पर बर-सरे पैक़ार[3] है,
जो मिटाए आज नफ़रत कोई ऐसा न मिला।

हम हुए बरबाद देखो इस जुनूने इश्क[4] में
दे सके जो दिल को राहत ऐसा बंदा न मिला।

कौन करता है बुतों के सामने सिज़दा[5] यहाँ,
है दिखावे का अक़ीदा[6] कोई बंदा न मिला।

वाह ! कैसी रहनुमाई[7] की है मेरे रहनुमा[8],
कर दिया गुमराह मुझको और रस्ता न मिला।

नाखुदा के नाम मैने धर दिया इल्जाम सब,
डूबती कश्ती को मेरी जब किनारा न मिला।

पहनकर मलबूसे - इन्साँ[9] फिरते हैं ये भेड़िए,
जो बचाए हमको 'बिस्मिल' वो जियाला न मिला।

---

१. परिचित २. मरने के लिए तत्पर, उन्माद ३. सर से पाँव तक लड़ने के लिए तैयार, मरने के लिए तत्पर ४. इश्क का उन्माद ५. झुककर सलाम ६. श्रद्धा ७. मार्गदर्शन ८. मार्गदर्शक ९. इन्सान का वेश, (भेस)

ग़ज़ल - ५१

दिल के क़रीब थे अगर, दिल में न क्यूँ समा सके,
हम से हुई थी क्या ख़ता[1], तुमको न याद आ सके ।

किसको सुनाएँ जा के हम, किस्सा मता-ए-दर्द[2] का,
किसकी जुबाँ करे बयाँ, हम न अगर सुना सके ।

फिक्रो- मलाल[3] है यहाँ, दिल में सवाल है यहाँ,
हश्र[4] में हम करेंगें क्या, कोई हमें बता सके ।

ऐसा हो कोई हमसफर, दर्दे दवा जो बन सके,
अतिशे-ग़म[5] में भी सदा, जब भी वो मुस्कुरा सके ।

रौनके बज़्म[6] बढ़ गई, फिर भी शिकायतें रहीं,
दिल की हिकायतों[7] से हम, बाज न फिर भी आ सके ।

तुम जो न सर उठा सके, हमको न गर भुला सके,
किसकी अदा-ए-हुस्न पर, इश्क के गीत गा सके ।

दिल में तो ये ख़याल था, रोएँगे मेरे हाल पर,
आए जो हाल पूछने, नज़रें न वो मिला सके ।

---

१. अपराध २. दर्द की पूँजी ३. चिंता और दुःख ४. कयामत का दिन जब सब मुरदे उठकर खड़े होंगे और उनके पाप पुण्य का हिसाब होगा ५.ग़म की आग ६.महफिल की रौनक ७.हकीक़त

ग़ज़ल - ५२

लब पे तेरे है कोई फरियाद[1] क्या,
हिल गई है ज़ुल्म की बुनियाद क्या।

चेहरा चेहरा सोच में है मुब्तिला[2],
बस्ती ख़्वाबों की हुई बरबाद क्या।

हिचकियाँ लेने लगे हैं हौसले,
आने वाली है कोई उफ्ताद[3] क्या।

तीर वो मुझपर चलाते हैं सदा,
रहम करता है कभी जल्लाद[4] क्या।

पेड़ पत्तों से हैं जब गुलशन हरा,
दिल हुआ है आप का नाशाद[5] क्या।

दिल में 'बिस्मिल' दर्द ने अंगड़ाई ली,
आ रहा है आज कोई याद क्या।

१. शिकायत २. व्यस्त, मशगुल ३. दुर्घटना ४. फाँसी देने वाला
५. प्रसन्न, खुश

ग़ज़ल - ५३

औने पौने बेची न हमने खुद्दारी[1] बाज़ारों में,
नाम न शामिल होने दिया है दुनिया के लाचारों में।

देखी दुनिया, लोग भी देखें, देखें इनके रंग नए,
बात निराली हम में भी है दुनिया केफनकारों[2] में।

चाहे कुछ भी कह ले दुनिया हम तो ऐसे ज़ियाले[3] हैं,
हमने अपनी जान लुटाई आज़ादी के धारों में।

सबने अपनी बात सुनाई हम तो मगर खामोश रहे,
दिल-ही-दिल में बात हुई थी बैठे जब चौबारों में।

दुनिया चाहे कुछ भी कह ले हममें है एहसास की आग,
जो था तख़य्युल[4] सहमा-सहमा खिल गया वो गुलज़ारों में।

पास में थी इख़लास[5] की दौलत इसी लिए तो बात बनी,
हो गया शामिल नाम हमारा दुनिया के दिलदारों में।

जिस्म के ज़ख़्म तो देखें सबने रुह के अब दिखलाएँ क्या,
ज़ख़्म दिए हैं इतने सारे हमको अपने यारों ने।

कुर्बत की चाहत में उनकी खुद ही से हम बिछड़ गए,
सो गए ओढ़ के चादर हम तो तनहाई के गारों में।

उनकी एक झलक की खातिर 'बिस्मिल' हम तो तरस गए,
उनका क्या वो घिरे हुए हैं फूलों केअंबारों में।

१.स्वाभिमान २. कलाकार ३. जान देने को तत्पर
४. कल्पना, खयाल ५. शिष्टाचार

ग़ज़ल - ५४

रिश्तों की अहमियत को भुलाने लगे हैं लोग,
मौसम की तरह रंग दिखाने लगे हैं लोग।

फूलों की आरजू ने परेशान कर दिया,
काँटों का ताज सर पे सजाने लगे हैं लोग।

पहले उगाते रहते थे फूलों की खेतियाँ,
नफरत के काँटे आज उगाने लगे हैं लोग।

दुनिया के दुःख और दर्द मिटाने के वास्ते,
दौलत सरे बाज़ार लुटाने लगे हैं लोग।

शौहरत का नश्शा सर पे चढ़ा बोलने लगा,
तख्ती पे अपना नाम लिखाने लगे हैं लोग।

कुर्बत के मरकज़ों[1] पे यूँ दुनिया सिमट गई,
इन्सानियत को आज भुलाने लगे हैं लोग।

खुद ही छुपे हुए थे हवा के हिसार[2] में,
फिर क्यूँ चराग़े-ज़ीस्त[3] बुझाने लगे हैं लोग।

'बिस्मिल' ये कैसा पर्दा पड़ा इनकी अक्ल पर,
अपने ही आशियाँ[4] को जलाने लगे है लोग।

१. केंद्र २. घेरे में ३. जीवन का दीपक ४. घर

ग़ज़ल - ५५

दुनिया में देखो आज ये कैसा रिवाज है,
इन्सान के लहू से भी महँगा आनाज है।

फूटपाथ पर ग़रीबी तड़पती है रातदिन,
अब मुफलिसी का मुल्क में हर सिम्त[1] राज है।

शायद यही तरक़्क़ी पसंदों का है चलन,
घर से निकल के आ गई सड़कों पे लाज है।

जब से हमारे मुल्क की टूटी हैं बेड़ियाँ,
सर पे हर एक शख़्स के काँटों का ताज है।

क्या होगा अपने देश का अंजाम क्या ख़बर,
मतलब परस्त[2] लोंगों के जो सर पे ताज है।

क्या हाल पूछते हो मियाँ रहबरों[3] का तुम,
'बिस्मिल', लुटेरों जैसा ही उनका मिजााज है।

१. दिशा २. मतलबी ३. मार्गदर्शक

नज्म १

एक अंधेरी रात थी, सुनसान सी सोई हुई,
और कोई नौहागर थी, नींद में खोई हुई।
चाँद तारे सो गए थे, थक के अलसाए हुए,
जैसे बासी हार में थे, फूल मुरझाए हुए।

चिलमनें उठतीं न थीं, जंजीरें भी हिलती न थीं,
पेड़ सारे सो रहे थे, पत्तियाँ हिलती न थीं।
सो रहा था हो के बेखुद, हर कोई पीरो- जवाँ,
सो रही थी ये ज़मीं, और सो रहा था आसमाँ।

हाँ मगर इक सिम्त जाने, क्यों चली हलचल बड़ी,
एक विधवा रो रही थी, हो के बेकल उस घड़ी।
हसरतें दम तोड़ती थीं, सीना-ए-सदचाक़ में,
आज उसके ख़्वाब सारे, मिल गए थे ख़ाक़ में।

सो गया था उसका शौहर, मौत की आग़ोश में,
जाने कैसा सदमा था वो, आ न पाई होश में।
ग़म के बादल घिर गए थे, खो गई किस हाल में,
पड़ गया हो फूल जैसे, कोई कंटक जाल में।

चाहकर भी दिल पे काबू, पा नहीं सकती थी वो,
और अपने दिल की हालत, कह नहीं सकती थी वो
जब अचानक सूने बिस्तर पर गई उसकी नज़र,
ग़म के मारे हो के बेकल, रख दिया तकिये पे सर।

हो गई थी उसकी ,खातिर, नींद भी जैसे हराम,
और पीना पड़ रहा था, उसको ज़हरीला ये जाम |
दोपहर की छाँव जैसी, ज़िंदगानी हो गई ,
प्यास भी बुझने न पाई, शादमानी खो गई |

याद-ए- शौहर आ रही थी, कौन समझाए उसे,
आँधियों में रास्ता अब, कौन दिखलाए उसे |
ग़म के बादल छा गए थे, हो रही थी बेकरार,
ले रही थी करवटों पर, करवटें वो बारबार |

आ के होठों पर कभी, मायूस आहें थम गईं,
और कभी सूनी कलाई पर निगाहें जम गईं |
अब जिएगी किसतरह वो, अपने शौहर के बिना,
जी भला सकता है कोई, प्राण प्यारे के बिना ?

आ गया उसको अचानक, अपनी गुडिया का खयाल,
फट गया जैसे कलेजा, हो गई फिर वो निढ़ाल,
आ रही है यादे- पैहम,[1] बीते लमहों की उसे,
भूल पाएगी वो कैसे, याद ज़ख्मों की उसे |

याद उसको आ रहे थे, सास नन्दों के सितम,
खत्म सारे हो गए थे, रिश्ते-नातों के भरम |
दिल तड़प कर कह रहा था, छोड़ दुनिया-ए-अलम,
वरना तुझको और तड़पाएँगे, दुनिया के सितम |

१. निरंतर आनेवाली यादें

एक दिन ऐसे अचानक, दिल के अरमाँ जाग उठे,
और अंधेरी रात में, कुछ दीप जैसे जल उठे|
रोशनी उम्मीद की जैसे, उसे मिलने लगी,
छाई थी चेहरे पे जो, पज़मुर्दगी हटने लगी|

रात की खामोशियों में, जाग उट्ठी कोई पुकार,
जैसे पर्वत से सुहाना गिर रहा हो आबशार,
थामने हाथ आ गया था, शख्स कोई एक दिन,
दिल पे उसके छा गया था, जादू उसका एक दिन|

हो चला था दिल सुबुक, जो रो रहा था बार-बार,
सिल गया था उसका दामन, जो हुआ था तार-तार|
दिल से उसने चाहा जिसको , वो उसे मिल ही गया ,
जो था मुरझाया हुआ वो, फूल आखिर खिल ही गया|

ज़िंदगी (नज़्म) २.

रास्ता दिखलाए जो, वो रहनुमा है ज़िंदगी,
काखाँ चलता रहा तो, सिलसिला है ज़िंदगी।
है बहारों का मिलन तो, शाम-ए-हिज्राँ ज़िंदगी,
मौजे-दरिया है कभी तो, है किनारा ज़िंदगी।

जो दिखाए अक्स अपना, आईना है ज़िंदगी,
खत्म जो कर दे जहाँ को, हादसा है ज़िंदगी।
हुस्न का जल्वा कभी तो, मौजिज़ा है ज़िंदगी,
ख्वाब बन जाए कभी तो, है मुअम्मा ज़िंदगी।

जब्त जो हमको सिखाए, और सलीका ज़िंदगी,
मार दे जो इसको ठोकर, तो सज़ा है ज़िंदगी।
अजनबी-सी है कभी तो, है शनासा ज़िंदगी,
है कभी गर्दे-सफर तो, हौसला है ज़िंदगी।

अहले-इमाँ है कभी तो, इक दुवा है ज़िंदगी,
है कभी तारीकियाँ तो, इक उजाला ज़िंदगी।
ये कभी तो हैं इबादत, और पूजा ज़िंदगी,
ग़म का नगमा है कभी तो, इक तराना ज़िंदगी।

तंग गलियों-सी न जाने, हो गई क्यूँ ज़िंदगी,
चीखती रूहों का मसकन, बन गई है ज़िंदगी।
हादिसों ने जो दिया वो, ज़ख्म गहरा ज़िंदगी।
जो समझ में ही न आए, फलसफ़ा है ज़िंदगी।

दास्ताँ है इक सुहानी, और फसाना ज़िंदगी,
मौत तो है इक हक़ीकत, वाकया है ज़िंदगी|
जो उड़ा ले जाए खुशियाँ, वो हवा है ज़िंदगी ,
है मसर्रत[१] ये कभी तो, मसअला[२] है ज़िंदगी|

ये कभी इनआम है तो इक सज़ा है ज़िंदगी,
है परिंदा ये कभी तो, आशियाना ज़िंदगी|
ये तलातुम[३] है कभी तो , है ये दरिया ज़िंदगी ,
एक जज्बा है कभी तो , वलवला[४] है ज़िंदगी|

है कभी दैरो - हरम तो, इक अक़ीदा[५] ज़िंदगी,
आबे - गंगा है कभी तो, आबे ज़मज़म[६] ज़िंदगी
दो कदम हैं ये कभी तो, फासला है ज़िंदगी
इब्तेदा है ये खुशी की, इन्तेहा है ज़िंदगी|

फूल भी है ये कभी तो, ख़्वाब भी है जिंदगी,
धूप भी है ये कभी तो छाँव भी है जिंदगी,
ये कभी सैलाब भी है, ज़लज़ला[७] है ज़िंदगी ,
जो कभी भी ना रूके वो, सिलसिला है ज़िंदगी|

फूल भी है ये कभी तो, खार भी है ज़िंदगी,
धूप भी है ये कभी तो, छाँव भी है ज़िंदगी,
आसमाँ से जो है उतरी, वो सहीफा[८] ज़िंदगी,
जो दिलों में है सभी के,वो अक़ीदा ज़िंदगी|
इसलिए 'बिस्मिल' हमें प्यारी है अपनी ज़िंदगी !

१.वियोग की रात २.समंदर की लहर ३.प्रतिबिंब ४. दुर्घटना ५.चमत्कार ६.पहेली ७. परिचित ८. घर, मकान ९. दर्शन, तत्त्वज्ञान १०. खुशी ११. समस्या १२. हिलोर, तूफान १३. आवेग १४. श्रध्दा १५. मक्के के पास जो पवित्र कुआँ है, उसका पवित्र पानी १६. भूचाल १७.पुस्तक

नज़्म (पैसा) ३.

पैसे की आज दास्ताँ तुमको सुनाऊँगा,
क्या-क्या छुपा है इसमें ' ये तुमको बताऊँगा।

पैसे ही का अमीर के दिल में खयाल है,
पैसे ही का फक़ीर भी करता सवाल है।
पैसे का हो अभाव तो होता मलाल है।
पैसा है जिसके पास वही मालामाल है।

पैसे का ढेर होने से सब ठाठ-बाट है,
पैसे के ज़ोर-शोर से बाज़ार-हाट है।
पैसा न हो तो कोठियों में सिर्फ टाट है।
पैसा न हो तो सोने को इक टूटी खाट है।

पैसा जो होवे पास तो मशहूर आदमी,
पैसा जो होवे पास तो मगरूर आदमी।
पैसा न हो तो होता है मजबूर आदमी,
पैसा वसूल करके है मसरूर आदमी।

पैसे के बल पे सारे सुकून - ओ - क़रार हैं,
पैसा जो होवे पास तो गहने हज़ार हैं।
पैसा जो है तो फिर सभी नक्शो निगार हैं।
पैसे के दम से दुनिया के सब कारोबार हैं।

पैसा ही यश दिलाता है इंसा की बात की,
पैसा हो जेब में तभी शादी बरात हो|
पैसे बिगैर भाई भी पूछे न बात को,
पैसा अगर हो काम बने आधी रात को|

जंगो-जदल[6] कराते हैं पैसे के वास्ते,
तीरो - कमाँ उठाते हैं पैसे के वास्ते,
मैंदाँ में ज़ख्म खाते हैं पैसे के वास्ते,
सर काटते कटाते हैं, पैसे के वास्ते|

लोगों को वो डराते हैं पैसे के ज़ोर से,
क्या-क्या हुनर[7] दिखाते हैं पैसे के ज़ोर से,
रोते हैं और रूलाते हैं पैंसे के ज़ोर से,
क्या-क्या सितम[8] वो ढाते हैं पैसे के ज़ोर से|

पैसे के दम से दोस्तो दुनिया में नाम है,
पैसा ही जिस्मो-जान[9] है पैसा ही काम है,
पैसे का इस जहान में ऊँचा मक़ाम है|
'बिस्मिल' हो पैसा पास तो दुनिया गुलाम है|

---

१. कहानी २. छिपा हुआ ३.दुख ४.घमंडी ५.फरार, भागा हुआ
६.लड़ाई, युद्धजंगो - जदल ७.कला ८. अत्याचार
९. शरीर और आत्मा .

नज़्म - ४

शहर -ए- पूना इस जहाँ में तू बड़ा जाँबाज़ है,
सुन के सब इतिहास तेरा होता ये दिलसाज़ है|
हर हुनरमंद का यहाँ होता बहुत एजाज़ है,
सुन के शोहरत की कहानी हमको होता नाज़ हैं |

जाने इसमें कितने ही फ़नकार पसअंदाज़ हैं,
धारिया - भिमसेन का होता यहाँ एजाज़ है,
कारनामों पे ही उनके होता हमको नाज़ है,
जाने कितने है मुसव्विर और नगीना साज़ है |

फडके चापेकर पे हमको आज भी अभिमान है,
फुले आंबेडकर ने इसकी खूब बढ़ाई शान है,
बाजी शिवबा ही से इसकी आज भी पहचान है,
भूमि ये इल्मो - अदब की जो हमारी जान है |

हरतरह के फन की यारो ये ज़मीं मशहूर है,
अपने-अपने फन में देखो हर कोई मसरूर है,
कौन कहता दिल हमारा सरहदों से दूर है,
आँख उठाकर इसको देखे किसमे ये मक़दूर है |

नाईक उमाजी लहुजी ने बढ़ाई शान है,
ज्योति सावित्री रमा से इल्म की पहचान है,
जोशी एस.एम. गोरे लिमये से हमें सम्मान है,
कर्वे तिलक गाडगील पे हमको तो अभिमान है |

गिर्द इसके पेड़-पौधों- झील -झरनों का जमाल,[6]
फिर भी हमको खौफ़[9] है अफसोस[10] है और है मलाल,
उठता है ताज़ा हवा का आज रह रहकर सवाल,
अब न रंगीनी - ए मग़रिब सिर्फ है बादे- ज़वाल।"

उर्दू हिंदी और मराठी के रिसाले[13] है यहाँ,
कितने ही मंदिरों - मसजिद और शिवाले हैं यहाँ,
सावरकर और भालेकर जैसे ज़ियाले हैं यहाँ,
हरतरह की महफिलों के भी उजाले हैं यहाँ।

खूबसूरत बस्तियाँ हैं दूरतक फैली हुई,
धुमती हैं आरजुएँ दैन्य दरसाती हुई।
दामने - गुलज़ार पे है प्यार बरसाती हुई,
सीना ए- कोहसार[14] पे हैं रंग बिखराती हुई।

माज़ी को ताज़ा किया है शहर - ए पूना ने यहाँ,
हरतरह की तीरगी को भी मिटाया है यहाँ।
कारवाँ ये वक्त का जो चल रहा है अब यहाँ,
हर तरफ इक खूबसूरत-सा नज़ारा है यहाँ।

कुछ समझ आती नहीं के अब मैं तुझसे क्या कहूँ,
छोड़कर मैं तेरा दामन दूर अब कैसे रहूँ।
तू अमानत है वतन की और मेरी जान है,
इसलिए ए शहर -ए-पूना तुझपे दिल कुरबान है।

---

१. दिलेर २.स्वागत ३. कलाकार ४. छिपे हुए ५. ज्ञान और साहित्य ६.भागा हुआ ७. ताकत ८.सोंदर्य ९.डर १०.दु:ख ११. रंगीन पश्चिम दिशा ११.डर १२. हवा का बवंडर १३.पत्रिका १४. पर्वत शिखर

कत्आत

१. लोग मसरूफ[1] हैं अपनी ही हिफाज़त में यहाँ,
आज इन्सान ने ये खेल रचा रक्खा हैं,
दीनो-इमान धरम और मज़ाहिब[2] सबकुछ,
पेट के नाम ही नीलाम चढ़ा रक्खा हैं।

२. जिसमें रहता था कभी चैनो -अमन आठों -पहर,
ज़हर वो आज खुदा जाने उगलता क्यों है ?
बारीशें प्यार की होती थीं जहाँ पर अक्सर,
शहर वो आज फसादात[3] में जलता क्यों है ?

३. जो राज़ है पोशिदा[4] बता क्यों नहीं देते ?
ए दोस्त मुझे अपना पता क्यों नहीं देते ?
ये फासला जो मिलने नहीं देता दिलों को,
इस राह के पत्थर को हटा क्यों नहीं देते ?

४. इक टूटे हुए दिल की सदा से नहीं डरता,
मज़लूम[5] की वो आहों-बुकाँ[6] से नहीं डरता,
इन्सान की फितरत को वो समझा नहीं 'बिस्मिल'
इन्सान से डरता है, खुदा से नहीं डरता।

५. मेरे दिलबर मेरा मेयार[7] तुझे क्या मालूम,
तुझसे कितना है मुझे प्यार तुझे क्या मालूम,
है मुझे ख़ौफ के हो जाए कहीं तू रूसवा,
मुझसे होता नहीं इज़हार[8] तुझे क्या मालूम।

१.व्यस्त २. धर्म ३. दंगा, झगड़ा ४.छिपा हुआ ५. सताया हुआ
६. आहें निःश्वास ७. स्तर ८. स्वीकार

६. हाँ ये रिश्वत ये चोर बाज़ारी,
पैसा दिन रात पैदा करती है,
जब बदलती है रूप वहशत का ,
बस खुराफात पैदा करती है|

७. जिसकी कुर्बत से आए बू-ए-वफ़ा,
वो कभी बेवफ़ा नहीं होता,
वक्त की और बात है लेकिन ,
आदमी खुद बुरा नहीं होता|

८. ज़ब्त से काम लिया करते हैं,
और दिल थाम लिया करते हैं,
ग़म को, मसर्रत[1] में बदलने के लिए,
हम तेरा नाम लिया करते हैं|

९. मुहब्बत तेग़[2] से कटती नहीं है
ये काग़ज की तरह फटती नहीं है,
मुहब्बत बाँट कर तो देख भाई,
ये बाँटे से कभी घटती नहीं है|

१०. मुहब्बत का दुनिया में कहना ही क्या है,
मुहब्बत है दैरो-हरम[3] से भी बढ़कर ,
कि कुर्बान जाते हैं सब इसकी खातिर,
मुहब्बत तो है हर धरम से भी बढ़कर|

११. आज यारों की ज़रूरत क्या है,
इन बहारों की ज़रुरत क्या है,
प्यार में जीने मरने वालों को,
इन सहारों की ज़रूरत क्या है|

१. खुशी २. तलवार ३. मंदिर मस्जिद

१२. आबरु-ए-हयात[1] इससे है,
दिल के जज़्बों की बात इससे है,
तर्क रिश्ता करो न दिलबर से,
जिंदगी को सबात[2] इससे है |

१३. वो तो शैतान को भगवान समझ बैठा है,
जाहिलों को भी वो विद्वान समझ बैठा है,
हैफ-सद-हैफ[3] जहालत की ये बातें 'बिस्मिल',
आदमी कुफ्र[4] को ईमान समझ बैठा है |

१४. मुश्किलें बार-बार क्यों आखिर,
रोना ही ज़ार-ज़ार क्यों आखिर,
ज़िंदगी नाम है इसी का ए दोस्त,
ज़िंदगी से फरार क्यों आखिर ?

१५. तेरे रहमो -करम की बारिश से,
बाग़ तखलीक का हरा हो जाए,
जो दिलों को वफ़ाओं से भर दे,
मुझको ऐसी जबॉं अता हो जाए |

१६. मुहब्बत सोज़[5] भी है साज़ भी है,
मुहब्बत दिल की इक आवाज़ भी है,
मुहब्बत रूह का नगमा है 'बिस्मिल',
मुहब्बत गोया इक एजाज़[6] भी है |

१७. जिसे गाते हैं अहले दिल हमेशा,
मुहब्बत बावफ़ाओं का है नगमा,
हुनरमंदों[7] को ये आती नहीं रास,
मुहब्बत दिल फिग़ारों का है नगमा |

---

१. जिंदगी की आबरु २. स्थिरता, ठहराव ३. अफसोस
४. धर्म को न मानना ५. जलन ६. सम्मान ७. कलाकारों को

१८. अमर है ये कोई फानी[1] नहीं है,
मुहब्बत का कोई सानी नहीं है,
मुहब्बत ही से सब सैराब[2] होंगे,
मुहब्बत दूध है पानी नहीं है।

१९. मुहब्बत कोहसारों[3] की जुबाँ है,
ये झरनों आबशारों[4] की जुबाँ है,
इसे गाती है कुद़रत अपनी लय में,
मुहब्बत तो बहारों की जुबाँ है।

२०. मुहब्बत तो पली है तीरगी[5] में,
मगर ये रोशनी ही रोशनी है,
मुहब्बत ज़िंदगी का दूसरा नाम,
मुहब्बत बंदगी ही बंदगी है।

२१. रंग लाएगी कभी मश्को रियाज़त[6] तेरी
कर न पाएगा कभी कोई शिकायत तेरी,
तालिबे इल्म समझ खुद को हमेशा 'बिस्मिल'
खुद करेगा ये जमाना ही हिमायत[7] तेरी।

१.नष्ट होने वाली टूटे दिल २. हरियाली ३.पर्वत ४.झरने
५.अंधःकार ६.कष्ट, तपस्या ७. समर्थन

२२. ज़िंदगी की हक़ीकतों को ए दोस्त,
मैंने हर ज़ाविए[1] से देखा है,
हूबहू ये हैं इक जदीद[2] गज़ल,
जिसका हर मिसरा इक मुअम्मा[3] है।

२३. अपनी हस्ती को दोस्तों के लिए,
तूने 'बिस्मिल' जो खाक़ कर तो लिया,
कौन सीएगा अब बता इसको,
पैरहन[4] अपना चाक़[5] कर तो लिया।

२४. दे-दे के लहू पालता है तू इनको शबो-रोज़,[6]
दिल कितने कुशादा[7] है यहाँ अहले वतन के,
काँटों का गुमा होता है लेकिन मुझे 'बिस्मिल'
चूभते हैं अजब तौर से ये ख़ार चमन के।

२५. इम्तेहाँ ले रहे हो क्यों आखिर,
ग़म मुझे दे रहे हो क्यों आखिर,
नाव गिरदाब[8] की तरफ मेरी,
माझियो ! खे रहे हो क्यों आखिर।

२६. जश्न होते हैं ग़मो -दर्द भुलाने के लिए,
गीत गाने के लिए हँसने-हँसाने के लिए,
ईद का चाँद ये देता है, ज़माने को पयाम,[9]
नेक हो नेक बनो ईद मनाने के लिए।

१.हर दृष्टिकोन २.आधुनिक ३. पहेली ४.वस्त्र ५.तार तार
६.रात दिन ७.विस्तृत ८.भँवर ९.संदेश

२७. ये दौर भी क्या दौर है, दौरे- तबाही,
सैलाब ये बढ़ता ही चला जाता है सर से,
अब कद्र हुनर की है न ही इल्मो-अदब की,
पहचानते हैं आज के इन्सान को जर से।

२८. ग़म में रहना तो सीख ले पहले,
दर्द सहना तो सीख ले पहले,
कारे-उस्ताद[1] बाद में करना,
शेर कहना तो सीख ले पहले।

२९. जज्ब-ए-दिल दिया क़रार दिया,
इक सलीका दिया मियार दिया,
शायरी से मिली है जिनको हयात,
ज़रपरस्ती[2] ने उनको मार दिया।

३०. खुद्नुमाई, खुदपसंदी, खुदसरी से तुम बचो,
ये सबक तो देते हैं, सब दैरो-काबा के इमाम,
मशअले हक़ से मगर तुम अपना दिल रोशन करो
कह रहा है तुमसे 'बिस्मिल' दे रहा है तुमको पयाम।

३१. बुजुर्गों को बड़ा सब मानते हैं,
पर उनकी मानता कोई नहीं है,
नज़र के सामने तो है उजाला,
मगर पहचानता कोई नहीं है।

---

१. उस्ताद का कार्य २.सोने चांदी का लालच

३२. दिल में मेरे उतर के देखो ज़रा
ज़ख़्म-ही-जख्म तुम तो पाओगे,
तुम शरीके-सफर[१] बनो तो सही,
सारे दुख-दर्द भूल जाओगे |

३३. आज तो ऐश, मगर कल ये तबाही देगी,
चाह उल्फत की ये तुमको मिटा ही देगी,
आग से प्यार करो सिर्फ हरारत[२] के लिए,
इसमें कूदोगे तो ये तुमको जला ही देगी |

३४. जो फासले हैं, मिटाकर मनाओ दीवाली,
दिलों में प्यार जगाकर मनाओ दीवाली,
सितारे बनके नुमायाँ[३] हो हर तरफ 'बिस्मिल'
चराग़े - इश्क जलाकर मनाओ दीवाली |

३५. वो देवता से बढ़ के है, पर देवता नहीं,
जिसकी निगाह मैं कोई छोटा-बड़ा नहीं,
वो जाँनिसार[४] जान लुटाता सभी पे है,
उसकी नज़र में कोई भी अच्छा-बुरा नहीं |

३६. क्या अजुबे[५] सामने आने लगे,
आँख वाले ठोकरें खाने लगे,
इस ज़माने का है अब ऐसा चलन,
जो हैं अंधे राह दिखलाने लगे |

१.सफर का साथी २. गरमी ३.प्रकट ४.दिलेर ५.अचरज

३७. उसकी लीला तो अनोखी हे मगर,
उसके बंदों का अजब दस्तूर है,
लक्ष्मी को पूजता है हर कोई,
और नारायण से कोसों दूर है |

३८. जिंदगी की कशमकश[1] ने कर दिया बेकल मुझे,
साथ मेरे आई है माजी से अब यह हाल तक,
मुझको बूढ़ा कर दिया है, मेरी तनहाई ने अब,
वरना मैं तो नौजवाँ रहता सवा सौ साल तक |

३९. बोलना सच बड़ा ही मुश्किल है,
हर कदम पर बवाल आते हैं,
बाद में पूजते हैं लोग उन्हे,
पहले तो सूली पर चढाते हैं |

४०. क्या कहूँ क्या समेट लाया हूँ,
ज़र्रा-ज़र्रा[2] समेट लाया हूँ,
चार मिसरों में तजुर्बों[3] से भरी,
एक दुनिया समेट लाया हूँ |

१. खींचा तानी २.कण-कण ३.अनुभव

दोहे

१. प्रीतम मन में बस गया, दूजा कहाँ समोय,
जैसे ही इक म्यान में, दो तलवारें न होय।

२. गरज पड़े जो आपको, मांगे से सकुचाय,
जैसे कोई कुलवधू, पर घर जात लजाय।

३. 'बिस्मिल' मत तुम बोइए, राह में उनके शूल,
बात बनेगी बावले, जब बोओगे फूल।

४. प्रेम की बानी बोलना, सब से अच्छा काम,
प्रेम ही से बन जाते हैं, सारे बिगड़े काम।

५. 'बिस्मिल' मन वो पाखरु, विचरत है मनभाय,
जो जैसी संगति करे, वैसे ही फल पाय।

६. पीछे जो लौटे नहीं, वो ही वीर कहाय,
शंका जीवन मरण की, मन में कभी न लाय।

७. जो जलकर न बुझ सके, बुझकर जल न पाय,
'बिस्मिल' अग्नि प्रेम की, बुझ-बुझ कर जल जाय।

८. 'बिस्मिल' आँसू आँख के, खोलत मन का भेद,
जिसको घर निकसा[२] मिले, खोलत घर का भेद।

९. उससे ही कुछ पाइए, जिसकी कीजै आस,
'बिस्मिल' खाली बावड़ी, बुझा न पाए प्यास।

१०. मेरे मन की बाँसुरी, तेरे मन के सूर,
मिल जाए तो हो जाए, दोनों के दुःख दूर।

११. भाग्य ने दिखलाएँ हैं, कैसे रूप अनूप,
बच्चे बिन माँ बाप के, सहते सर पर धूप।

१२. काली-काली आँखों में उजले उजले ख्वाब,
तनहाई में धुल गए, जीवन के असबाब[१]।

१३. कौन तुझे समझाएगा, अनुभव के ये बोल,
चिंता चिता सजाए है, मन की गठरी खोल।

१४. छेड़ तू ऐसी रागिणी, मन को सुख पहुँचाए,
इक-इक सुर और ताल से, जीवन खिल-खिल जाए।

१५. काग़ज क़लम को हाथ ले, मैंने लिखे हैं हर्फ[२],
मुझको हासिल हो गया, गीत ग़ज़ल का शर्फ[३]।

१६. मैं आशिक तख़लीक[४] का, वो लफ्ज़ों की खान,
हो जाए गर मेल तो, मिल जाए सम्मान।

१७. तनहाई के गर्भ से निकले जिस दम आह,
बिरहा बैरन बन गई, पूरी हुई न चाह।

१८. राखिए इतना फासला, जिससे बाढ़े प्रीत,
इतना पास न आइए, छूट न जाए मीत।

१९. जैसे जिसका करम है, वैसे ही फल पाए,
पेड़ लगाए नीम का आम कहाँ से आए।

२०. साबित कदमी आदमी[१], मंजिल को पा जाए,
जिस नौका में छेद हो, कैसे साहिल पाए।

२१. आडंबर को छोड़िए गुण का कीजै मोल,
कागा कोयल भेद ही, देता है ऋतु खोल।

२२. 'बिस्मिल' ऊँचा होत है, उसके गुण का मान,
इल्मो-फ़न की ज़िंदगी, जीते हैं ये जान।

२३. दीन धर्म का आदमी, ईश्वर के गुण गाए,
अपनी-अपनी रस्म से, एक ही फल वो पाए।

२४. कहने को तो शहर है, पर जंगल का राज,
ना इज़्ज़त महफूज़[६] है, ना बहनों की लाज।

२५. गुलशन महके फूल से, खुशबू से दिल जान,
शायर मन तख़लीक[७] से, सुरभित है ये मान।

२६. मेरे मन की चाँदनी, तेरे मन की धूप,
हम दोनों के प्रेम से, निखरे धरती रूप।

२७. जो नर डींगे हाँकता, सोते जगते जोए,
उसकी आँखें खोलना, 'बिस्मिल' बुरा न होय।

२८. 'बिस्मिल' ताड़ का पेड़ तो, ऊँचा होत ज़रुर,
पर वो छाँव ना दे सके, ऐसा है मजबूर।

२९. दिल के भीतर आग है, कोई देख न पाए,
कैसे जाने अजनबी, अनुभव बिन वो हाए।

३०. ऐसा करतब कीजिए, जामे मन सुख पाए,
'बिस्मिल' वो मत कीजिए, जो मन को खा जाए |

३१. 'बिस्मिल' दान से ज्ञान तो, बढ़ता है ये जान,
जो नर ज्ञान न बाँटता, वो नर धूलि समान |

१. काँटे २. घर से निकाल देना ३. सुरक्षित ४. सृजन ५. साधन, सामान ६. अक्षर ७. सृजन, निर्मिति ८. बड़प्पन ९. सोच-समझकर कदम उठाने वाला

माहिए

१. आँखों में बसा लेंगे,
प्रेम की मूरत को,
हम दिल में छुपा लेंगे।

२. हम ग़म को सहे कैसे,
तेरे गिले शिकवे,
दुनिया से कहे कैसे।

३. क्यों तीर से चलते है,
बिरह की रातों में,
वो पीर से जलते है।

४. जाएँ तो कहाँ जाएँ,
तोड़ के दिल तेरा,
हम चैन कहाँ पाएँ।

५. आँखों में उदासी है,
यार बिना अब तो,
ये रात भी प्यासी है।

६. ये देश की मिट्टी है,
दिल से लगा लूँगा,
ये प्रेम की चिट्ठी है।

७. रंगों में नहाएँगे,
तुम जो चले आओ,
हम होली मनाएँगे।

८. ये प्रीत तो धोखा है,
जो न कभी खाए
वो शख़्स अनोखा है।

९. माँग उसकी सजा रखना
मेरे खुदा उसको,
महफूज़[१] सदा रखना।

१०. वो ज़ख़्म नया देंगे,
प्यार में अपने ही,
दिलबर[२] को दगा देंगे।

११. इतना तो किया होता,
नज़रे इनायत[३] से,
पैग़ाम[४] दिया होता।

१२. क्यूँ दिल में छुपा बैठे,
ज़हरे हलाहल को,
होठों से लगा बैठे।

१३. अब चूप न रहा जाए,
ज़ख़्म न भरते हैं,
न दर्द सहा जाए।

१४. जब ख़्वाब जवाँ होंगे,
याद सताएगी
हम जाने कहाँ होंगे।

१५. दिल मेरा दीवाना है,
जख़्म नया लेकिन,
ये घाव पुराना है।

१६. अब पहलू में आ जाओ,
दिल तो तुम्हारा है,
इस दिल में समा जाओ|

१७. ये रात सुहानी है,
दिल में मेरे लेकिन,
क्यों याद पुरानी है|

१८. हम शीश झुका देंगे,
देश की खातिर हम,
ये जान लूटा देंगे|

१९. लोगों का ये कहना है,
देश की मिट्टी तो,
इस मुल्क का गहना है|

२०. ये बात पुरानी है,
भूल नहीं सकते,
ऐसी ये कहानी है|

२१. आँखों में समंदर है,
बिरहा की रातों में,
प्यासा ये मुकद्दर[२] है|

२२. वो कैसे जियाले[३] हैं,
उनकी बदौलत ही,
हर सिम्त[४] उजाले हैं|

२३. यलगार[५] नहीं करते,
गांधी के चेले है,
दुनिया से नहीं डरते।

२४. जज़्बों की कमी है ये,
ग़म में भिगोती है,
आँखों की नमी है ये।

२५. इक फूल नहीं मिलता,
दिल का मेरे अब तो,
गुलज़ार नहीं खिलता।

२६. सोना है न चाँदी है,
कौन इसे समझे,
ये वक़्त की आँधी है।

२७. तुम बाम[१] पे आ जाओ,
दीद[२] की चाहत है
आँखों में समा जाओ।

२८. एहसास ये जागा है,
पेड़ के दामन में,
इक प्रेम का धागा है।

२९. जाऊँ तो कहाँ जाऊँ,
छोड़ के दर तेरा
मैं चैन कहाँ पाऊँ।

३०. हम सपने सजाएँगे
प्यार मोहब्बत के,
रंगों में नहाएँगे।

३१. नफरत को मिटाएँगे,
अम्न के शैदाई,
हम देश बचाएँगे।

३२. ये माँ की दुवाएँ हैं,
मिल न सके सबको,
ऐसी ये वफाएँ हैं।

३३. ये धूप सहेली है,
बूँद को तरसाए,
ऐसी ये पहेली है।

३४. क्यूँ याद दिलाते हो,
बीत गया सावन,
क्यूँ मान बढ़ाते हो।

३५. तलवार चलाते हो,
प्यार मुहब्बत की,
औकात घटाते हो।

१. सुरक्षित २. प्रेमी ३. कृपा ४. संदेश ५. स्वभाव ६. तक़दीर
७. जाँबाज ८. दिशा ९. आक्रमण १०.छत, अटारी ११. दर्शन

गीत १

बहरे ग़म[१] में घिरा ये दिल है कहाँ जाए कोई,
कोई कश्ती है ना साहिल[२] है कहाँ जाए कोई।
जख्में दिल फूल की मानिंद[३] चहकता है कहीं,
कोई नगमा तेरी यादों का महकता है कहीं,
पीके दीवाना संभलता है बहकता है कहीं,
यादे-माज़ी की ये झिलमिल हैं कहाँ जाए कोई,
कोई कश्ती है ना साहिल है कहाँ जाए कोई ॥१॥
ग़म की बदली कही टल जाए तो कुछ बात बने,
शम्मे-उल्फत[४] कोई जल जाए तो कुछ बात बने,
प्यार का पौधा ये फल जाए तो कुछ बात बने,
ऐसा होना बड़ा मुश्किल है कहाँ जाए कोई,
कोई कश्ती है ना साहिल है कहाँ जाए कोई ॥२॥
एकतरफ उनकी ज़फाएँ[५] हैं इलाही तौबा,
एकतरफ तिरछी निगाहें हैं इलाही तौबा,
एकतरफ सारी बलाएँ हैं इलाही तौबा,
एकतरफ ये दिले-'बिस्मिल' हैं इलाही तौबा,
कोई कश्ती है ना साहिल है कहाँ जाए कोई ॥३॥
बहरे ग़म में घिरा ये दिल है कहाँ जाए कोई,
कोई कश्ती है ना साहिल है कहाँ जाए कोई।

१. ग़म का सागर २.किनारा ३.जैसा ४.उल्फत (प्रेम) की शमा
५.सितम, अत्याचार

गीत २

ये कैसी बरसात है,
तनहाई[१] की रात है,
यांदों में खोया हूँ मैं,
कैसे ये जज़बात[२] हैं।
ना जाने किस गर्त[३] में,
उलझे मेरे भाग हैं,
मन चंचल भरमाया हैं,
हाथ न मेरे आया हैं।
मौसम का पैग़ाम[४] है ये,
तनहाई का जाम है ये,
पीकर के मैं खो जाऊँ,
चादर ओढ़ के सो जाऊँ।
दे दे मुझको अपना ग़म,
दीवाना मैं हो जाऊँ,
अपना आप मिटाकर मैं,
तेरे दिल में खो जाऊँ।
सूख चूका है जीवन घाट,
टूट चूका है छत का टाट,

अब तो हो गया मैं नाकाम,
कबतक जोऊँ तेरी बाँट।
कोयल-सी बोली बोलूँ,
झूठ और सच को मैं तोलूँ,
जन-जन के मन के नभ पर,
जीवन के अनुभव खोलूँ।
राहें क्यूँ ये बदल गईं,
दुनिया मेरी सिमट गई,
झिल-मिल करते तारों-सी,
आँखें क्यूँ ये तरस गईं।
सूना है मन का ये नगर,
बुझी-बुझी-सी है ये नज़र,
घिर गया मैं अनजानों में,
कैसे पाऊँ अपनी डगर।
स्नेहदीप अब रीत गया,
सपनों का पल बीत गया,
जीवन की इस भीड़ में अब,
मन का मीत अब छूट गया।
जीवन प्याला छलक गया,
आँख का मोती ढुलक गया,

फिर भी जग के प्यासों में,
नाम तुम्हारा पुलक गया।
अनुभव का ये सार है,
जीवन ये निस्सार है,
काम किसी के आ जाऊँ,
जीवन का उद्धार है।

कहमुकरनियाँ- (बुझारितें)

ये है घर-आँगन की शोभा,
और है दोनो कुल की शोभा,
बातें करें वो मीठी-मीठी,
क्या सखी साजन ? न सखी बेटी |

कभी मिल गया कभी खो गया,
जागते जागते जैसे सो गया,
हर पल रंग दिखाए अपना,
क्या सखी साजन ? न सखी सपना |

रह-रहकर बूँदें बरसाए,
तन-मन में वो आग लगाए,
भिगो के मेरा चोली-दामन,
क्या सखी साजन? न सखी सावन |

घर में नाचता गाता आए,
और सब का वो दिल बहलाएँ,
खुश हो सोनू मोनू बीवी,
क्या सखी साजन? न सखी टीवी।

कभी हँसाए, कभी रुलाए,
कभी-कभी गले लग जाए,
कभी बदलकर अपने तेवर,
क्या सखी साजन ? न सखी देवर।

काम सदा वो सब के आता,
सोते जागते हमें लुभाता,
सब को नचाए बंदर जैसा,
क्या सखी साजन ? न सखी पैसा।

सीने पर वो बिछ-बिछ जाता,
मुझको छेड़ता और मुसकाता,
उसके दीद को हरदम प्यासा,
क्या सखी साजन? या है नवासा।

हर महफिल में रोब जमाए,
कभी ये आईसक्रीम खिलाए,
हर लीडर दीवाना उसका,
ए सखी साजन? न सखी चमचा।

हर औरत का दिलबर - जानी,
इससे इनकी प्रीत पुरानी,
हर घर को है इससे प्यार,
ए सखी साजन? न सखी अचार।

हरा भरा रंग मन को लुभाए,
होठों में लाली भर लाए,
इसकी खूब निराली शान,
ए सखी साजन? न सखी पान |

निखरा निखरा यौवन उसका,
हर वादी में तन-मन जिसका,
स्वर्ग की मानो हो तसवीर,
ए सखी साजन? ना कश्मीर |

खेले हमसे आँख मिचौली,
ऐसा है सब का हमजोली,
पल में हाजिर, पल में ओझल,
ऐ सखी साजन ? न सखी खटमल |

हर नुक्कड पर भाषणबाजी,
और कहीं है अतिशबाजी,
मोड़-मोड़ पे चले है भाषण,
ऐ सखी मेला ? या इलेक्शन |

तरह-तरह के वादे करता,
पर वादा ना कभी निभाता,
भाषण से मन को है लुभाता,
ऐ सखी साजन ? न सखी नेता |

प्रेम प्यार के गीत सुनाए,
किसी को मन का मीत बनाए,
पैदा कभी वो कर दे अनबन,
ऐ सखी साजन ? न सखी चितवन |

अपना साथी है मतवाला,
उसका है बस रूप निराला,
घर द्वार का है रखवाला,
ए सखी साजन ? न सखी ताला |

सारे घर पर उसका साया,
सब के मन को उसने लुभाया,
बारीश धूप सब अपने सर पर,
ए सखी साजन ? न सखी छप्पर |

उसके तो हैं बावन चेहरे,
कोई उसके पास न ठहरे,
प्यार बढ़े तो हो जाए नाश,
ए सखी साजन ? न सखी ताश |

जिसको पाकर मन भर आए,
फिर भी सबके मन को भाए,
छबि उसकी अनमोल कहो ना,
ए सखी साजन ? न सखी सोना।

बिन जिसके कोई गीत न बोले,
पायल संग संगीत में डोले,
गायक, आशिक, शायर, झुमरू,
ए सखी साजन ? न सखी घुँघरू।

ऊपर-नीचे आए-जाए,
डाली, डाली पर इतराए,
साँझ को लौटे सुबह का भूला,
ए सखी साजन ? न सखी झूला।

पैदा होता है जो जलकर,
रूप निखारता आँखो में रहकर,
साँझ-सबेरे हरदम हरपल,
क्या सखी साजन ? न सखी काजल।

कभी हँसता कभी रुलाता,
तरह-तरह्र के खेल दिखाता,
खाता कभी लगाता ठोकर,
क्या सखी साजन ? न सखी जोकर।

पहले आकर रोब जमाता,
तरह-तरह के बोल सुनाता,
बड़े अजब हैं उसके फीचर,
क्या सखी साजन ? न सखी टीचर।

ग़म में भी जो साथ निभाए,
खुशी में चुपके से आ जाए,
मन से आँख तक है बेकाबू,
क्या सखी साजन ? न सखी आँसू |

थक जाऊँ तो साथ निभाए,
सो जाऊँ तो ख्वाब दिखाए,
लेटा जो कमरें के अंदर,
क्या सखी साजन ? न सखी बिस्तर |

सूरज भी लाए चाँद भी लाए,
तरह-तरह के फूल खिलाए,
घर द्वार सब उससे रोशन,
ए सखी साजन ? न सखी आँगन |

फूलों पर जो प्यार लुटाता,
हार कभी गजरा ले आता,
सैर कराता, सबसे आली,
ए सखी साजन ? न सखी माली !

बारह महीने आँख लड़ाता,
तारीखों में वह उलझाता,
और इतराता दीवार से लगकर,
ए सखी साजन ? या कॅलेंडर |

पेशानी पर सुर्खी जिसकी,
हर आशिक पर नज़र है उसकी,
झूठी सच्ची ख़बरें हैं हज़ार,
ए सखी साजन ? ना अखबार |

उसकी तो है बात निराली,
फंदा उसका सबसे आली,
कपट कटारी मन में हुलिस,
क्या सखी साजन ? न पुलिस।

होकर बेकल उसे पुकारूँ,
उसकी हर शोभा को निहारूँ,
फिर भी कस दे प्यार का फंदा,
क्या सखी साजन ? न सखी चंदा।

सुबह-शाम को ये आ जाए,
लालसा उसकी मन को भाए,
ये ना आए तो निकले हाय,
क्या सखी साजन ? न सखी चाय।

कभी हँसाता, कभी रुलाता,

पल-पल अपने रंग दिखाता,

क्षण में कर देता जो जल-थल,

ए सखी साजन ? न सखी बादल।

नए-नए तेवर दिखलाता,

जिसके जाल में जग फँस-जाता,

करिश्में उसके अफलातून,

ए सखी साजन ? न कानून।

तिकड़ियाँ

लेकर नाम श्री गणेश,
श्री गणेश करूँ तिकड़ी मैं,
कहकर ब्रह्मा विष्णू महेश।

वर दे मुझको माँ सरस्वती,
चले कलम फिर ऐसा मेरा,
जल जाए फिर ज्ञान की ज्योती।

भारत के ये खेल-खिलाड़ी,
पैसों के हाथों में बिककर,
फिक्सिंग की ये करे जुगाड़ी।

भारत के ये सारे खेल,
करने ही वाले हैं इक दिन,
सारी अर्थ व्यवस्था फेल।

करूँ मैं पूजा तेरी हरदम,
नाम रहे जुबाँ पर तेरा,
जबतक मुझमें बाक़ी दमखम|

इस जग में इन्साँ का आना,
आना-जाना इक सच्चाई,
'बिस्मिल' मौत है एक बहाना|

देखो ए मजबूर बुढ़ापा,
बहू-बेटियाँ कर दे रुखसत,
भूल गया अपनत्व सरापा|

तेरी महिमा अपरंपार,
और तेज़ है अति महान,
मेरी नैय्या कर दे पार|

भेद-भाव हो जाएँगे भस्म,
भारत की सत्ता से 'बिस्मिल'
घृणा अगर हो जाए खत्म|

अए दाता मेरे भगवान,|
कलम चले मेरा दिन-रात,
मुझको ऐसा दे वरदान|

मेरे इंद्रियों के स्वामी,
तुम तो हो एक अंतर्यामी,
मेरे उद्धार की भर दो हामी,
नीम हक़ीम है ख़तरे जान,
राजनीति के अंधे युग में,
चपरासी पाए सम्मान|

ध्यान में रख मेरी सौग़ात,
हाजतमंदों के काम आना,
है ये सब से बढ़कर बात,

वो तो है बस इक हरजाई,
जो न करे इज्जत अपनों की,
देने लगा है वही सफाई|

जिससे सबने रिश्ता तोड़ा
अपने अदना स्वार्थ की खातिर
तूने उससे रिश्ता जोड़ा

नई रोशनी के उजियाले,
हमने भी देखे हैं यारो,
तन है उजले दिल है काले।